कविताएँ

सुब्रह्मण्य भारती



सुब्रह्मण्य भारती सन् 1919 में

कविताएँ

सुब्रह्मण्य भारती

मूल तमिल में भारती की चुनी हुई कविताएँ,
उनका देवनागरी लिप्यंतर और हिन्दी रूपांतर

सम्पादक

इन्दिरा अर्जुन देव
प्रभाकर द्विवेदी
अर्जुन देव

विद्ययाऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
National Council of Educational Research and Training

दिसम्बर, 1982
अग्रहायण, 1904

P.D.5T.—RP

चित्र एवं आवरण : शांतो दत्त
आवरण संयोजन : चंद्रप्रकाश टंडन

मूल्य : रु० 9.90

प्रकाशन विभाग में, श्री विनोद कुमार पंडित आई० ए० एस०, सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली–110016 द्वारा प्रकाशित और एलाइड पब्लिशर्स प्रा० लि०, ए/104, मायापुरी इंडस्ट्रियल एरिया, फेज II, नई दिल्ली–110064 में मुद्रित ।

आमुख

सुब्रह्मण्य भारती हमारे देश के विशिष्ट कवियों में माने जाते हैं। साथ ही वे एक कुशल लेखक और भारत के स्वाधीनता-सेनानी भी थे। अपने काव्य के माध्यम से उन्होंने अंधविश्वासों, पुराने रीति-रिवाजों और सामाजिक बुराइयों की बेड़ियों में जकड़े मानव-मन को मुक्त कराने की कोशिश की। उनकी साम्राज्यवाद-विरोधी मुद्रा और सामाजिक रूप से सताए गए लोगों की हितचिंता ही प्रमुख रूप से उनके काव्य में मुखर हुई है। उनके कवि रूप में कितनी दूर दृष्टि और कल्पना शक्ति थी, इस बात का पता इसी से चल जाता है कि आज़ादी पाने के बहुत पहले ही उन्होंने देख लिया था कि स्वतंत्र भारत की सामाजिक और राजनीतिक संरचना किस प्रकार की होगी। विज्ञान और शिल्पविज्ञान की उन्नति में उनकी दृढ़ आस्था थी।

कवि भारती की जन्म शताब्दी 11 दिसम्बर 1982 को मनाई जा रही है। इस अवसर पर पहली बार भारती की कविताओं का यह द्विभाषी संस्करण निकाल कर राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् कवि के प्रति अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करती है। यह राष्ट्रीय जीवन में भारती के योगदान के प्रति परिषद् के सम्मान का प्रतीक है। असंख्य भारतीयों को प्रेरित करने वाली रचनाओं के जनक, भारत माँ के इस दुलारे सपूत की स्मृति के प्रति यह हमारी श्रद्धांजलि है।

प्रस्तुत द्विभाषी प्रकाशन में कवि की एकतीस चुनी हुई कविताओं का मूल तमिल पाठ, उनका देवनागरी लिप्यंतरण और उनका हिन्दी अनुवाद दिया जा रहा है। साथ ही कवि की एक छोटी-सी जीवनी भी दी जा रही है। कविताओं का चयन 14 से 18 वर्ष के किशोर पाठकों को ध्यान में रखकर किया गया है। मोटे तौर पर यह संकलन भारती की राष्ट्र प्रेम की कविताओं ; राष्ट्रीय एकीकरण और शिक्षा की कविताओं ; जातिवाद, अस्पृश्यता, सामाजिक बुराइयों और दमन के खिलाफ़ लिखी गई कविताओं ; शिशु गीतों और भक्ति गीतों का प्रतिनिधित्व करता है। 'कुयिल पाट्टु' और 'पांचाली शपथम' नाम की दो प्रमुख कविताओं को ही इसमें नहीं दिया जा सका है।

तमिल कविताओं का देवनागरी लिप्यंतरण हम इसलिए दे रहे हैं कि तमिल न जानने वाले पाठक उनको मुखर रूप से पढ़ सकें और तमिल न जानने पर भी भारती की तमिल कविताओं का सस्वर पाठ कर सकें और तमिल भाषा एवं लिपि के सौन्दर्य की सराहना कर सकें।

भारती की इन कविताओं का चयन और उनका देवनागरी लिप्यंतरण श्रीमती इंदिरा अर्जुन देव ने किया है। मैं उनका आभार प्रकट करता हूँ। श्री प्रभाकर द्विवेदी ने कविताओं का हिन्दी अनुवाद किया है और श्री अर्जुन देव ने इस पुस्तक की रचना में पर्याप्त सहयोग प्रदान किया है। इसके लिए मैं उनको धन्यवाद देता हूँ। डॉ० माणिकलाल चतुर्वेदी के प्रति भी मैं आभारी हूँ जिन्होंने देवनागरी लिप्यंतरण में सहायता दी।

पांडुलिपि की समीक्षा करने में और कविताओं के चयन, लिप्यंतरण और रूपांतरण में जिन प्रतिष्ठित तमिल विद्वानों का मार्गदर्शन हमें मिला, उनके प्रति परिषद् आभारी है। डा० एस० रामकृष्णन की अंग्रेजी पुस्तक 'भारती : पोएट, पैट्रियॉट, प्रॉफ़ेट' में दिए गए कविताओं के अनुवादों से भी हम लाभान्वित हुए हैं।

साज-सज्जा और रूपायन की दृष्टि से परिषद् पहली बार इस किस्म की पुस्तक निकाल रही है। इसका श्रेय श्री शांतो दत्त को दिया जाना चाहिए। इस कार्य में श्री चन्द्र प्रकाश टंडन ने उनकी सहायता की है। मैं इन दोनों सज्जनों का आभारी हूँ। पुस्तक की रचना में प्रारंभ से अंत तक श्री ए० अनंताचार्य ने जितना परिश्रम किया उसके लिए उनका आभार प्रकट करना आवश्यक है।

इस पुस्तक के बारे में किशोर पाठकों की प्रतिक्रिया और सुझावों का हम स्वागत करेंगे।

त्रिलोकनाथ धर
संयुक्त निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली
दिसम्बर, 1982

कृतज्ञता-ज्ञापन

इस पुस्तक की रचना अनेक व्यक्तियों के सहयोग से ही संभव हो सकी है। विशेषकर निम्नलिखित सज्जनों का आभार हम स्वीकार करते हैं :

डॉ० एस० रामकृष्णन, मदुरै; डॉ० वेदमणि मैन्युअल, प्रोफेसर ऑव एजुकेशन, केरल विश्वविद्यालय, त्रिवेन्द्रम; डॉ० एस० वी० सुब्रह्मण्यन, निदेशक, अंतर्राष्ट्रीय तमिल अध्ययन संस्थान, मद्रास; डॉ० टी० मुत्तुकन्नप्पन, मद्रास; डॉ० के० आरुमुगम, प्रोफेसर ऑव तमिल, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डॉ० वी० आर० जगन्नाथन, प्रोफ़ेसर, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, नई दिल्ली; डॉ० के० ए० जमुना, लेक्चरर, जानकी देवी महाविद्यालय, नई दिल्ली; डॉ० एन० सुन्दरम, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, प्रेसीडेंसी कालेज, मद्रास; और श्री ए० अनंताचार्य, नई दिल्ली।

विषय-सूची

* यहाँ दिए गए कविताओं के शीर्षक और पृष्ठ संख्याएँ हिन्दी रूपांतर से संबद्ध हैं जिन्हें दाहिनी ओर के पृष्ठों पर छापा गया है। रूपांतर के सामने के बाएँ पृष्ठ पर संबद्ध कविता का मूल तमिल पाठ और उसका देवनागरी लिप्यंतर मिलेगा।

सुब्रह्मण्य भारती

(एक परिचय)

सी० सुब्रह्मण्य भारती की गणना उन विशिष्ट व्यक्तियों में होती है जिन्होंने भारत के राष्ट्रीय जागरण और स्वाधीनता-संघर्ष के ज़माने में भारतीय जनमानस की चेतना को नए साँचे में ढाला। वे एक राष्ट्रीय आन्दोलक, संगठक, पत्रकार, समाज-सुधारक, कहानीकार, निबंधकार और सबसे बढ़कर एक कवि थे---तमिल पुनर्जागरण के अग्रदूतों में से एक।

तमिल साहित्य के इतिहास में उनका काव्य एक नए युग का उद्‌घोषक है। भारत की सांस्कृतिक विरासत में जो भी सर्वोत्तम है, भारती ने उसी का प्रतिनिधित्व किया, उसी को पोषण प्रदान किया। हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन में जो तत्त्व सबसे अधिक प्रगतिशील था भारती ने उसी को ग्रहण किया।

भारती महाकवि थे। वे राष्ट्रीय पुनरुत्थान के अप्रतिम कवि थे। उनकी मृत्यु के एक वर्ष बाद, सन् 1922 में उनकी देशभक्ति की कविताओं का जो संचयन प्रकाशित हुआ, उसकी भूमिका में विख्यात राष्ट्रीय नेता एस० श्रीनिवास आयंगार ने लिखा, "भारतीय जीवन और चरित्र को विलक्षण रूप से बदलने वाली भारतीय राष्ट्रवाद की नई आत्मा तमिल भूमि में स्वर्गीय सी० सुब्रह्मण्य भारती के स्वरों में अभिव्यक्त होती है। इस प्रतिभा पुत्र ने अपने प्रेममय हाथों से भारत के असली मन, मस्तिष्क और आत्मा के मधुरतम तथा सबसे उल्लसित फूलों को चुना है और भारत माता के चरणों में अर्पित करने के लिए उनसे अविनाशी गीतों की माला गूँथी है। कलादेवी ने भारती को जितनी विश्वसनीयता, विशुद्धता और भावप्रवणता प्रदान की है, उतनी कृपा बिरलों पर ही होती होगी।"

सुब्रह्मण्य का जन्म 11 दिसम्बर, 1882 ई० को तमिलनाडु के तिरुनेलवेली जिले के एट्टयपुरम में हुआ था। उनके पिता चिन्नास्वामी अय्यर स्थानीय ज़मींदार (जिन्हें राजा कहा जाता था) की नौकरी करते थे। वे अपने पुत्र को गणित व विज्ञान पढ़ाकर इंजीनियर बनाना चाहते थे। लेकिन सुब्रह्मण्य स्कूल से गोल हो जाते और खेतों में घूमा करते। वे प्रकृति में खो जाते या किसानों के लोकगीत सुनते या तमिल कवियों की पुस्तकें पढ़ा करते। सात वर्ष की उम्र से उन्होंने गीत लिखना शुरू कर दिया। ग्यारह वर्ष की उम्र में एक कवि सम्मेलन में आशुकविता रचने के उपलक्ष्य में उनको भारती का खिताब मिला। भारती सरस्वती देवी का ही एक नाम है। उस दिन से सुब्रह्मण्य का नाम ही भारती हो गया और आज तक वे इसी नाम से जाने जाते हैं।

सन् 1898 ई० में भारती के पिता का देहांत हो गया और तब उन्हें बनारस जाना पड़ा जहाँ उनकी बुआ रहा करती थीं। बनारस में भारती की पढ़ाई फिर से शुरू हुई और

उन्होंने प्रथम श्रेणी में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की । उन्होंने हिन्दी, संस्कृत और आगे चल कर कई अन्य भाषाएँ भी पढ़ीं । बनारस में रहते हुए भारती नए विचारों और अनेक देश-प्रेमी नवयुवकों के सम्पर्क में आए । उन्होंने अपनी पारंपरिक शिखा मुँड़ा दी और मूँछें रख लीं । उन्होंने पगड़ी बाँधना और कोट पहनना भी शुरू किया जो उस ज़माने में उत्तर भारत की आम पोशाक थी ।

एट्टयपुरम के 'राजा' के निमंत्रण पर राजकवि के रूप में भारती अपने ज़िले में वापस आए लेकिन वे वहाँ ज्यादा दिन न रुक सके क्योंकि राजदरबार का वातावरण बड़ा दमघोंटू था । सन् 1904 के शुरू में वे मदुरै चले गए जहाँ तीन महीनों तक एक स्कूल में उन्होंने तमिल पढ़ाया । मदुरै से वे मद्रास गए और वहाँ उस ज़माने के एकमात्र तमिल दैनिक 'स्वदेशमित्रन' में वे काम करने लगे । इस अखबार की स्थापना मद्रास में राष्ट्रीय पत्रकारिता के अगुआ जी० सुब्रह्मण्य अय्यर ने की थी । वे ही उसके सम्पादक भी थे ।

अखबार के सम्पादकीय विभाग में काम करने से भारती राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक घटनाचक्र को समझने लगे । वे कई युवा उग्रवादी नेताओं के संपर्क में भी आए जिनमें वी० ओ० चिदम्बरम पिल्लै और सुब्रह्मण्य शिवा भी थे । बंगाल के विभाजन के बाद जब राष्ट्रीय आन्दोलन ने नया मोड़ लिया तो भारती दक्षिण में स्वदेशी आन्दोलन के एक अगुआ बन गए । सन् 1906 में हुए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में भारती ने भी भाग लिया । वहाँ उनकी भेंट भगिनी निवेदिता से हुई । इस छोटी सी भेंट में ही वे निवेदिता से बड़े प्रभावित हुए । सन् 1907 ई० में कांग्रेस के सूरत अधिवेशन में तमिलनाडु के सौ अन्य 'उग्रवादी' प्रतिनिधियों के साथ भारती भी सम्मिलित हुए । कांग्रेस के 'उग्रवादी' अंग के नेता बाल गंगाधर तिलक के जादू ने भारती को भी बाँध लिया ।

अपने मित्रों की सहायता से भारती ने एक तमिल साप्ताहिक 'इंडिया' निकालना शुरू किया जिसके आदर्श वाक्य के रूप में इस पर फ्रांसीसी क्रांति का नारा, 'आज़ादी, समानता, भाईचारा' छपा रहता था । इस पत्र को उग्र राष्ट्रवादी प्रचार का माध्यम बनाया गया । भारती की अपनी रचनाओं—कविताएँ, विवादात्मक और व्यंग्यात्मक लेख के अलावा पत्र में वी० ओ० चिदम्बरम (जिन्हें वी० ओ० सी० नाम से जाना जाता है) और शिवा के लेख रहते थे, और रहते थे तिलक, विपिनचंद्र पाल और अरविंद घोष के भाषणों व लेखों के अनुवाद । भारती और उनके उग्रवादी मित्रों के ही कारण तमिलनाडु में 'नरमपंथियों' का दबदबा समाप्त किया जा सका और वहाँ का राष्ट्रीय आन्दोलन देश की 'उग्रवादी' राजनीति की मुख्य धारा में ला मिलाया गया ।

'उग्रवादी' नेताओं को और उनके कार्यक्रमों को दिन ब दिन मिलने वाली लोकप्रियता से अंग्रेज़ी सरकार के कान खड़े हो गए। बढ़ती हुई राष्ट्रीयता के तेज़ ज्वार को समाप्त करने के दृढ़ निश्चय के साथ विदेशी सरकार ने दमन चक्र चलाया। तिलक और बहुत से दूसरे व्यक्तियों को गिरफ्तार कर लिया गया। अनेक अखबारों एवं पत्र-पत्रिकाओं को जब्त कर लिया गया। 'इंडिया' के संपादक को गिरफ्तार करने के लिए वारंट जारी किए गए। हालाँकि भारती ही इस पत्र के असली सम्पादक थे पर नाम के लिए किसी और को बिठा रखा गया था, उसे गिरफ्तार कर लिया गया। भारती को मित्रों ने चुपके से पांडिचेरी चले जाने के लिए राज़ी कर लिया। पांडिचेरी फ्रांसीसी शासन के अंतर्गत था इससे वहाँ से पत्र का प्रकाशन करना आसान था। सन् 1908 में पांडिचेरी से पत्र का पुन: प्रकाशन शुरू हुआ।

पांडिचेरी में भारती दस वर्षों तक निर्वासित के रूप में रहे। हालाँकि वे अंग्रेज़ी पुलिस की सीधी पकड़ में नहीं थे फिर भी पुलिस के जासूसों और अंग्रेज़ों द्वारा भाड़े पर लिए गए गुंडों द्वारा उन्हें परेशान किया जाता रहा। लगभग डेढ़ वर्ष के प्रकाशन के बाद 'इंडिया' को बंद कर देना पड़ा क्योंकि वह भारत में नहीं आ सकता था। भारती ने 'विजय' नामक दैनिक पत्र भी शुरू किया था, लेकिन उसे भी बंद कर देना पड़ा। ऐश नामक एक अंग्रेज़ कलक्टर के क़त्ल में फँसाकर उन्हें गिरफ्तार करने के लिए वारंट जारी किए गए। इन परेशानियों के बावजूद, देखा जाए तो कई तरह से ये दस वर्ष भारती के जीवन के अत्यंत महत्वपूर्ण वर्ष थे। इसी दौरान उन्होंने 'इंडिया' और दैनिक 'विजय' के अलावा 'कर्मयोगी' नामक एक तमिल मासिक और 'बालभारत' नामक एक अंग्रेज़ी पत्रिका का प्रकाशन भी थोड़े समय के लिए किया। हालाँकि सन् 1910 के बाद वे अपनी रुचि की राजनीतिक विचारधारा का कोई पत्र संपादित नहीं कर पाए, फिर भी अनेक अखबारों और पत्रिकाओं में वे अपनी रचनाएँ छपवाते रहे। वस्तुत: इसी अवधि में उनकी कुछ श्रेष्ठतम रचनाओं का सृजन और प्रकाशन हुआ जिनमें तीन महान कविताएँ 'पांचाली शपथम' (द्रौपदी की शपथ), 'कन्नन पाट्टु' (कृष्ण गीत) और 'कुयिल पाट्टु' (कोयल गीत) तथा 'गीता' का अनुवाद शामिल हैं।

पांडिचेरी में भी भारती के अनेक मित्र और भक्त थे। मित्रों में विशेष उल्लेखनीय अरविंद घोष और वी० वी० एस० अय्यर के नाम हैं। उस ज़माने के इन दो महान क्रांतिकारियों और भारती के बीच बड़ी घनिष्ठता थी। ये दोनों भारती के आने के बाद ही पांडिचेरी में आए थे। अरविंद घोष मानिकतल्ला बम केस से छूट कर यहाँ आए और वी० वी० एस० अय्यर लंदन से बचते बचाते यहाँ पहुँचे।

प्रथम विश्व युद्ध के बाद सन् 1918 के समाप्त होने के कुछ पहले, भारती और उनके स्वदेशी मित्रगण जो पहले पांडिचेरी भाग गए थे, वहाँ से मद्रास के लिए चले। एक पुराने वारंट के आधार पर भारती को गिरफ्तार कर लिया गया और कुडलोर जेल में एक महीने तक हिरासत में रखा गया। वहाँ से छूट कर वे 'स्वदेशमित्रन' में पुनः उप-संपादक हो गए जहाँ उन्होंने कविताएँ और अन्य रचनाएँ लिखीं तथा छपवाईं। लेकिन पांडिचेरी में निर्वासन का जीवन बिताते-बिताते वे अपना स्वास्थ्य चौपट कर चुके थे।

तभी एक ऐसी दुर्घटना हो गई जो भारती की असामयिक मृत्यु का निमित्त बनी। भारती एक मंदिर में पूजा के लिए जब कभी जाते तो वहाँ एक हाथी को केले खिलाया करते थे। आगे चलकर यह हाथी मत्त हो गया। भारती को यह बात पता न थी। हमेशा की तरह वे केले और गुड़ लेकर हाथी की तरफ बढ़े। अचानक मत्त हाथी ने उन्हें सूँड़ से उठा कर ज़मीन पर पटक दिया। भारती घायल हो गए। सदमे और चोटों के कारण उन्होंने शय्या पकड़ ली। उनकी हालत पहले से ही खराब थी, तभी कोढ़ में खाज की तरह उन्हें पेट की बीमारी ने पकड़ लिया। भारती का शरीर यह सब बर्दाश्त न कर सका। 39 वर्ष की आयु में, 11 सितम्बर 1921 को उन्होंने दम तोड़ दिया।

गद्य और पद्य दोनों में ही भारती की रचनाओं की विविधता हमें विस्मित कर देती है। निर्विवाद रूप से उन्होंने आधुनिक तमिल का स्तर ऊँचा किया है। तमिल साहित्य में प्राण फूंकने के लिए उन्हें हमेशा याद किया जायेगा। प्रसिद्ध तमिल विद्वान डॉ० एस० रामकृष्णन के शब्दों में, भारती ने 'तमिल को पुराणपंथी पंडितों के चंगुल से मुक्त कराकर उचित स्थान पर प्रतिष्ठित किया'।

यहाँ पर भारती की कुछ ही रचनाओं का उल्लेख किया गया है और जिन कुछ कविताओं को प्रस्तुत पुस्तक में शामिल किया गया है (कुछ के तो केवल चुने हुए अंशों को ही लिया गया है) उनसे भारती के लेखन की आंशिक झलक ही मिल पाएगी।

भारती के गीतों ने न केवल जनमानस को उसकी नींद से जगाया बल्कि आज़ादी की लड़ाई में उन्होंने प्रेरक नारों की भूमिका भी निभाई। हर किस्म के शोषण और दमन के खिलाफ़ एक सामाजिक अनुशासन कायम करने में इन गीतों का अपना योगदान है। सन् 1905 से 1921 तक का समय भारती के लिए सृजन का सबसे अच्छा समय रहा है। यही वह समय है जब विदेशी शासकों से न्याय के लिए मात्र अनुनय-विनय करना हमने बंद कर दिया और राष्ट्रीय आंदोलन ने जन आंदोलन का विराट रूप धर लिया।

जहाँ तक स्वाधीनता संग्राम का ताल्लुक है, इस अवधि ने बड़े उतार-चढ़ाव देखे। भारती को जनता की विजय और आज़ादी की प्राप्ति में कभी संदेह नहीं रहा। उन्होंने

स्वाधीनता पाने की खुशी में तो गीत लिखे ही साथ ही भारतीय इतिहास के उस नए युग के स्वागत में भी गीत गाए जब सभी तरह की असमानताएँ समाप्त हो जाएँगी। भारतीय जीवन की असमानताओं का उनको इतना ध्यान था कि प्रायः वे अनेकों को गिनाते चलते हैं।

देश-प्रेम के गीतों और मानव-समानता के गीतों के क्षेत्र में भारती का मुकाबला बहुत कम भारतीय कवि कर पाएँगे। उन्होंने ऐसे बीसियों गीत गाए जिनमें भारत माता की महिमा है, जात-पाँत के बंधनों से ऊपर होकर भारतीय जनता की एकता है, तमिल भाषा की महानता है, स्त्रियों की शिक्षा और मुक्ति के लिए आह्वान है, नव भारत की कल्पना है, देश के औद्योगिक व तकनीकी विकास की कामना है, और है सभी तरह के दमन के खिलाफ़ संघर्ष का स्वर। भारत के साथ-साथ उनको विश्व की गतिविधियों की भी जानकारी थी। दमन और शोषण के खिलाफ़ दुनिया के किसी भी कोने में हो रहे संघर्ष के समर्थन में वे अपना स्वर मुखर करते हैं। फ्रांसीसी क्रांति की जयंती मनाना वे नहीं भूलते, आयरलैंड के स्वाधीनता संग्राम का समर्थन वे करते हैं और रूसी क्रांति की सफलता से आह्लादित होते हैं। सच तो यह है कि रूसी क्रांति के अवसर पर गीत लिखने वालों में वे पहले कुछ कवियों में से हैं।

जीने के लिए भारती को छोटा-सा जीवन मिला, पर उसी में वे आज़ादी और समानता के कवि बन गए—भारत की आज़ादी के कवि और विदेशी दासता में मरते-खपते देशों के स्वाधीनता-संग्राम और मानव-समानता के कवि—क्योंकि भारती का दृढ़ विश्वास था कि आज़ादी और समानता पाने के बाद ही लोग शांति और खुशहाली से रह सकते हैं।

किशोर पाठकों से निवेदन

प्रस्तुत पुस्तक में भारती की 31 कविताएँ हैं। कुछ कविताएँ पूरी की पूरी दी गई हैं, शेष के चुने हुए पदों को ही लिया गया है। पदों के अंत में दी गई संख्या से पता चलता है कि मूल कविता में वह पद किस क्रम से आया है।

विशेष लिपि-चिन्हों का इस्तेमाल यों तो आँखों में किरकिरी सा चुभता है लेकिन किसी भाषा का लिप्यंतरण करते समय मूल भाषा के प्रति ईमानदार बने रहने के लिए यह ज़रूरी है। यहाँ यह प्रयास किया गया है कि विशेष लिपि-चिन्हों का इस्तेमाल कम से कम क़िया जाए। यदि किशोर पाठक लिपि-चिह्नों की योजना को अच्छी तरह से समझ लें और तमिल-भाषी शिक्षकों अथवा सहपाठियों की मदद लें, तो लिप्यंतरित कविताओं का सस्वर पाठ करना या उन्हें गाना उनको आसान लगेगा।

तमिल भाषा के लिपि चिन्हों के लिए पुस्तक में प्रयुक्त देवनागरी और रोमन के लिपि-चिन्हों की सूची

स्वर

அ	ஆ	இ	ஈ	உ	ஊ	எ	ஏ
अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऍ	ए
a	ā	i	ī	u	ū	e	ē

ஐ	ஒ	ஓ	ஔ	ஃ
ऐ	ऑ	ओ	औ	ह्
ai	o	ō	au	h

व्यंजन

க	க	ங	ச	ஜ	ஞ	ட	ட	ண	த	த
क	ग	ङ	च	ज	ञ	ट	डं	ण	त	द
k	g	ng	ch	j	nj	ṭ	ḍ	ṇ	t	d

ந	ப	ப	ம	ய	ர	ல	வ	ழ
न	प	ब	म	य	ऱ	ल	व	ळ
n	p	b	m	y	r	l	v	zh

ள	ற	ன	ஸ	ஷ	ஹ
ळ	ऱ	ऩ	स	ष	ह
ḷ	ṛ	n	s	sh	h

टिप्पणी : (i) क, च, ट, त, प का उच्चारण तमिल शब्दों के आदि में जैसा होता है, वैसा शब्दों के मध्य में, विशेषकर दो स्वरों के बीच में, नहीं होता। (ii) च का उच्चारण शब्द के आदि में और दो स्वरों के बीच में 'स' जैसा होता है। (iii) इस तरह की स्थितियों में ध्वनि को प्रकट करने के लिए उपयुक्त देवनागरी और रोमन लिपि-चिन्हों का प्रयोग किया गया है।

कविताएँ

1. வந்தே மாதரம்

வந்தே மாதரம் என்போம் — எங்கள்
மாநிலத் தாயை வணங்குதும் என்போம்.

(வந்தே)

ஜாதி மதங்களைப் பாரோம்—உயர்
ஜன்மம் இத்தேசத்தில் எய்தினராயின்
வேதியராயினும் ஒன்றே — அன்றி
வேறு குலத்தினராயினும் ஒன்றே. 1

(வந்தே)

1. वन्दे मातरम्

वन्दे मातरम् ऍन्बोम् — ऍङ्गळ्
मानिल-त् तायै वणंगुदुम् ऍन्बोम्।

(वन्दे)

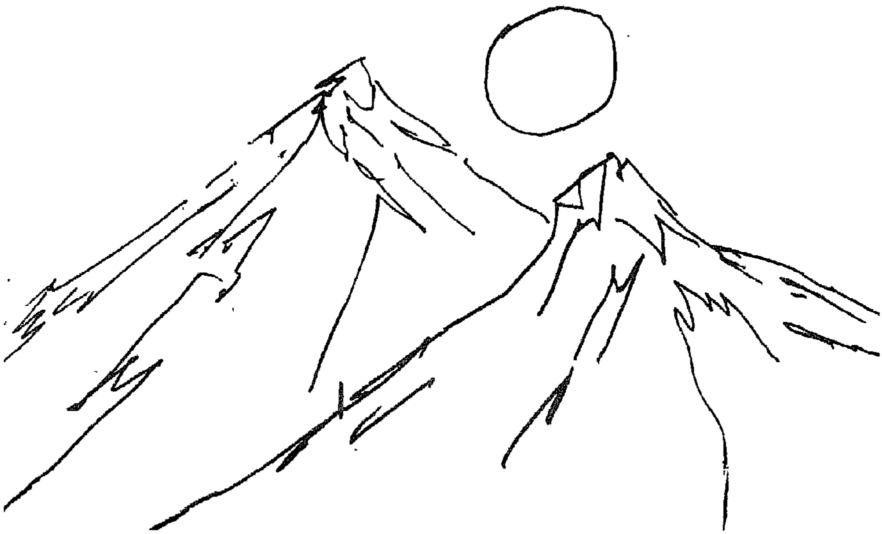
जाति मदंगळै पारोम् — उयर्
जन्मम् इद्देसत्तिल् ऐय्दिनरायिन्
वेदियरायिनुम् ऑन्ऱे — अन्ऱि
वेऱु कुलत्तिनरायिनुम् ऑन्ऱे।

(वन्दे) 1

1. वन्देमातरम्

आओ गाएँ 'वन्देमातरम्' ।
आओ भारत माँ की वंदना करें ।

हम ऊँच नीच का भेद नहीं मानते,
हम जाति धर्म को नहीं जानते ।
चाहे वे ब्राह्मण हों या न हों,
वे महान हैं, क्योंकि वे इसी धरती के पुत्र हैं ।
आओ गाएँ 'वन्देमातरम्' ।
आओ भारत माँ की वंदना करें ।



ஈனப் பறையர்களேனும் — அவர்
    எம்முடன் வாழ்ந்திங்கிருப்பவர் அன்றோ ?
சீனத்தராய் விடுவாரோ? — பிற
    தேசத்தர் போல் பல தீங்கிழைப்பாரோ? 2
(வந்தே)

ஆயிரம் உண்டிங்கு ஜாதி — எனில்
    அன்னியர் வந்து புகல் என்ன நீதி? — ஓர்
தாயின் வயிற்றில் பிறந்தோர் — தம்முள்
    சண்டை செய்தாலும் சகோதரர் அன்றோ? 3
(வந்தே)

ईऩ-प् परैयर्गळेनुम् — अवर्
    ऍम्मुडऩ् वाऴ्न्दिङ्गिरुप्पवर् अऩ्ऱो ?
चीऩत्तराय् विडुवारो ? — पिऱ
    देसत्तर पोल् पल तीङ्ङिऴैप्पारो ?

(वन्दे) 2

आयिरम् उण्डिङ्गु जाति — ऍऩिल्
    अऩ्ऩियर् वन्दु पुगल् ऍऩ्ऩ नीति ? — ओर्
तायिऩ् वयिट्रिल् पिऱन्दोर् — तम्मुळ्
    सण्डै सॆय्दालुम् सगोदरर् अऩ्ऱो ?

(वन्दे) 3

तुम उन्हें कहते हो अछूत—छोटी जाति वाले,
लेकिन क्या वे इसी देश में
हमारे साथ ही नहीं रहते ?
क्या वे चीनियों की तरह विदेशी बन जाएँगे ?
क्या वे परायों की तरह हमें नुकसान पहुँचाएँगे ?
आओ गाएँ 'वन्देमातरम्' ।
आओ भारत माँ की वंदना करें । 2

यहाँ जात-पाँत है और हैं हज़ारों जातियाँ,
लेकिन क्या अधिकार है विदेशियों को यहाँ घुस आने का ?
भले ही हम लड़ते रहें आपस में
पर क्या नहीं हैं हम सभी संतान एक माँ की ?
क्या नहीं हैं हम सभी भाई-भाई ?
आओ गाएँ 'वन्देमातरम्' ।
आओ भारत माँ की वंदना करें । 3



ஒன்று பட்டால் உண்டு வாழ்வே — நம்மில்
ஒற்றுமை நீங்கில் அனைவர்க்கும் தாழ்வே
நன்றிது தேர்ந்திடல் வேண்டும் — இந்த
ஞானம் வந்தால் பின் நமக்கெது வேண்டும்? 4
(வந்தே)

எப்பதம் வாய்த்திடுமேனும் — நம்மில்
யாவர்க்கும் அந்த நிலை பொதுவாகும்.
முப்பது கோடியும் வாழ்வோம் — வீழில்
முப்பது கோடி முழுமையும் வீழ்வோம். 5
(வந்தே)

ऑऩ्ऱु पट्टाल् उण्डु वाऴ्वे — नम्मिल्
ऑट्रुमै नीङ्गिल् अनैवर्क्कुम् ताऴ्वे;
नऩ्ऱिदु तेर्न्दिडल् वेण्डुम् — इन्द
ज्ञानम् वन्दाल् पिन् नमक्कॅदु वेण्डुम् ?
(वन्दे) 4

ऍप्पदम् वाय्त्तिडुमेऩुम् — नम्मिल्
यावर्क्कुम् अन्द निलै पॉदुवागुम्;
मुप्पदु कोडियुम् वाऴ्वोम् — वीऴिल्
मुप्पदु कोडि मुऴुमैयुम् वीऴ्वोम्।
(वन्दे) 5

7

एकता ही शक्ति है ।
जब हम उसे खो देते हैं,
हम गिरा लेते हैं अपने आपको ग़ैरों की निगाहों में ।
आओ इस सच को समझने की कोशिश करें ।
एक बार इस ज्ञान को पा जाएँ
तो ज़रूरत नहीं और कुछ पाने की ।
आओ गाएँ 'वन्देमातरम्' ।
आओ भारत माँ की वंदना करें । 4

चाहे जो भी कुछ हो जाए,
होगा वह सभी के साथ ।
यदि हम जीवित रहते हैं, तो रहेंगे सभी तीस कोटि ।
यदि हम गिरते हैं, तो गिरेंगे सभी तीस कोटि एक साथ ।
आओ गाएँ 'वन्देमातरम्' ।
आओ भारत माँ की वंदना करें । 5

2. செந்தமிழ் நாடு

செந்தமிழ் நாடெனும் போதினிலே — இன்பத்
தேன் வந்து பாயுது காதினிலே — எங்கள்
தந்தையர் நாடென்ற பேச்சினிலே — ஒரு
சக்தி பிறக்குது மூச்சினிலே 1
(செந்தமிழ்)

காவிரி தென்பெண்ணை பாலாறு — தமிழ்
கண்டதோர் வையை பொருணை நதி — என
மேவிய ஆறு பலவோடத் — திரு
மேனி செழித்த தமிழ்நாடு 3
(செந்தமிழ்)

2. सैंन्तमिऴ्नाडु

सैंन्तमिऴ् नाडैंनुम् पोदिनिले — इऩ्ब-त्
तेऩ् वन्दु पायुदु कादिऩिले — ऍङ्गळ्
तन्दैयर् नाडैंन्र पेच्चिनिले — ऑरु
शक्ति पिरक्कुदु मूच्चिऩिले।

(सेन्तमिऴ्) 1

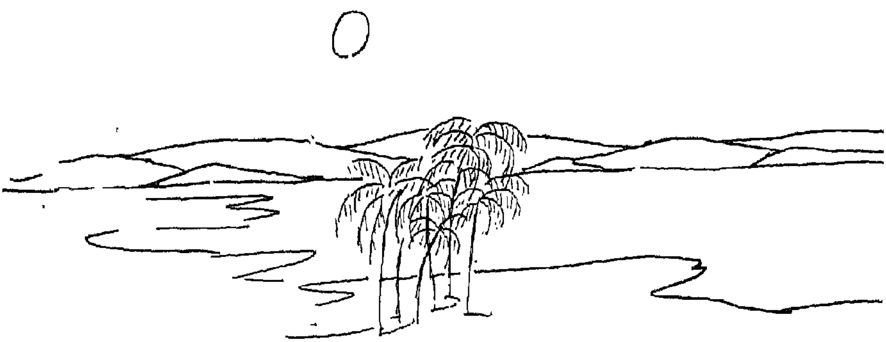
काविरि तैंऩ् पैंण्णै पालाऱु — तमिऴ्
कण्डदोर् वैयै पोंरुणै नदि — ऍऩ
मेविय आऱु पलवोड-त् — तिरु
मेऩि सैंऴित्त तमिऴ्नाडु।

(सेन्तमिऴ्) 3

2. मधुर तमिल की भूमि हमारी

जब भी कहते हैं 'मधुर तमिल की भूमि'
हमारे कानों में आ गिरता है मीठा मधु ।
जब भी जिक्र आता है पुरखों की भूमि का
हमारी साँस को मिल जाती है नव शक्ति ।
जब भी कहते हैं 'मधुर तमिल की भूमि'
हमारे कानों में आ गिरता है मीठा मधु । 1

सबसे सुंदर, सबसे उर्वर, है यह भूमि हमारी
जहाँ बहे कावेरी, पेन्नइ, पोरुन्नाइ की धारा ।
और बहे वैगाई जिसके तट पर गूँजे गीत तमिल के ।
जब भी कहते हैं 'मधुर तमिल की भूमि'
हमारे कानों में आ गिरता है मीठा मधु । 3



நீலத்திரைத் கடல் ஓரத்திலே — நின்று
நித்தம் தவம் செய் குமரி எல்லை — வட
மாலவன் குன்றம் இவற்றிடையே — புகழ்
மண்டிக் கிடக்கும் தமிழ்நாடு. 5
(செந்தமிழ்)

கல்வி சிறந்த தமிழ்நாடு—புகழ்க்
கம்பன் பிறந்த தமிழ்நாடு — நல்ல
பல்விதமாயின சாத்திரத்தின்—மணம்
பாரெங்கும் வீசும் தமிழ்நாடு 6
(செந்தமிழ்)

नील-त् तिरैक्ककडलओरत्तिले — नित्ऱु
नित्तम् तवम् सॅय् कुमरि ऍल्लै — वड
मालवन् कुन्ऱम् इवट्रिडैये — पुगऴ्
मण्डि-क् किडक्कुम् तमिऴ्नाडु ।
(सेन्तमिऴ्) 5

कल्वि सिऱन्द तमिऴ्नाडु — पुगऴ् - क्
कम्बऩ् पिऱन्द तमिऴ्नाडु — नल्ल
पल्विदमायिऩ सात्तिरत्तिऩ् — मणम्
पारॆङ्गुम् वीसुम् तमिऴ्नाडु ।
(सेन्तमिऴ) 6

नीले सागर से प्रक्षालित दक्षिणी भूमि का तट
जहाँ कुमारी देवी करती है सदा सर्वदा तप
और तिरुमलाई की उत्तरी पहाड़ियों के बीच
फैली है महिमा से मंडित तमिल देश की भूमि ।
जब भी कहते हैं 'मधुर तमिल की भूमि'
हमारे कानों में आ गिरता है मीठा मधु । 5

यही है गहन विद्यार्जन की भूमि
यही है महाकवि कम्बन की जन्म भूमि
अनेकानेक शास्त्रों ने जन्म लिया यहीं
जिनकी प्रसिद्धि से परिचित है पूरी मही
जब भी कहते हैं 'मधुर तमिल की भूमि'
हमारे कानों में आ गिरता है मीठा मधु । 6



வள்ளுவன் தன்னை உலகினுக்கே — தந்து
    வான்புகழ் கொண்ட தமிழ் நாடு — நெஞ்சை
அள்ளும் சிலப்பதிகாரமென்றோர் — மணி
    ஆரம் படைத்த தமிழ்நாடு. 7

(செந்தமிழ்)

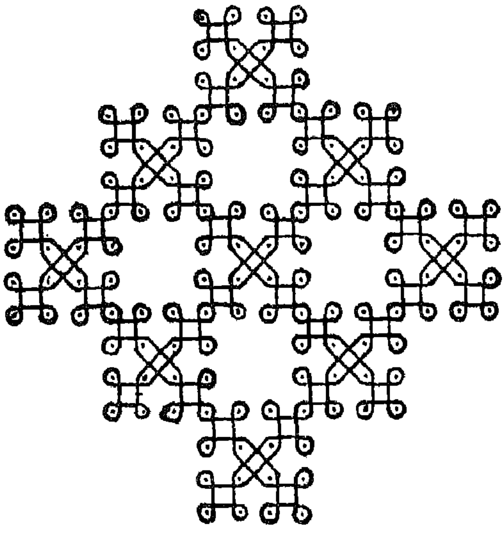
○

वऴ्ऴुवऩ् तऩ्ऩै उलगिनुक्के — तन्दु
    वाऩ् पुगऴ् कॉण्ड तमिऴ्नाडु — नेञ्जै
अऴ्ऴुम् सिलप्पदिकारम् ऍऩ्ऱोर् — मणि
    आरम् पडैत्त तमिऴ्नाडु।

(सेन्तमिऴ्) 7

○

हमारी इस भूमि ने विश्व को दिया महान् वल्लुवर
जिससे मिली हमको प्रतिष्ठा सब ही ओर।
हमारी इस भूमि ने रचा महाकाव्य 'सिलप्पदिकारम'।
जब भी कहते हैं 'मधुर तमिल की भूमि'
हमारे कानों में आ गिरता है मीठा मधु। 7



3. தாயின் மணிக்கொடி

தாயின் மணிக்கொடி பாரீர் ! - அதைத்
தாழ்ந்து பணிந்து புகழ்ந்திட வாரீர் !

(தாயின்)

கம்பத்தின் கீழ் நிற்றல் காணீர் — எங்கும்
காணரும் வீரர் பெருந்திருக் கூட்டம்,
நம்பற்குரியர் அவ்வீரர் ; — தங்கள்
நல்லுயிர் ஈந்தும் கொடியினைக் காப்பார். 4

(தாயின்)

3. तायिऩ् मणिक्कॊॅडि

तायिऩ् मणिक्कॊॅडि पारीर् ! — अदै-त्
ताऴ्न्दु पणिन्दु पुगऴ्न्दिड वारीर् !

(तायिऩ्)

कम्बत्तिऩ् कीऴ् निट्रल् काणीर् — ऍङ्गुम्
काणरुम् वीरर् पॆरुन्तिरु-क् कूट्टम्,
नम्बऱ्कुरियर् अव्वीरर्! — तंगळ्
नल्लुयिर् ईन्दुम् कॊॅडियिऩै-क् काप्पार्

(तायिऩ्) 4

3. भारत माँ की अनमोल ध्वजा

देखो, भारत माँ की अनमोल ध्वजा !
उसको नमन करो ! वन्दना करो ! सम्मान करो !

इकट्ठे खड़े हैं ध्वज-स्तम्भ के नीचे
असाधारण दिलेरी वाले असंख्य लोग;
वे सब हैं विश्वसनीय निष्ठावान—
राष्ट्र ध्वज की रक्षा के लिए
अपनी जान हथेली पर ले, कुर्बान जाने को तैयार। 4



செந்தமிழ் நாட்டுப் பொருநர்—கொடும்
      தீக்கண் மறவர்கள் சேரன் தன் வீரர்,
சிந்தை துணிந்த தெலுங்கர் — தாயின்
      சேவடிக்கே பணி செய்திடும் துளுவர் 6
(தாயின்)

கன்னடர் ஒட்டியரோடு — போரில்
      காலனும் அஞ்சக் கலக்கு மராட்டர்
பொன்னகர்த் தேவர்கள் ஒப்ப — நிற்கும்
      பொற்புடையார் இந்துஸ்தானத்து மல்லர் 7
(தாயின்)

सॆन्तमिऴ् नाट्टु-प् पॊरुनर्, — कॊडुम्
      तीक्कण् मऱवर्गळ् सेरऩ्तऩ् वीरर्,
सिन्दै तुणिन्द तॆलुङ्गर्, — तायिऩ्
      सेवडिक्के पणि सॆय्दिडु तुळुवर्
(तायिऩ्) 6

कऩ्नडर् ऑट्टियरोडु, पोरिल्
      कालऩुम् अञ्ज-क् कलक्कु मराट्टर्
पॊऩ्नगर् तेवर्गल् ऑप्प — निऱ्कुम्
      पॊऱ्पुडैयार् इन्दुस्तानत्तु मल्लर्
(तायिऩ्) 7

तमिलनाडु के बहादुर दिलेर;
केरल के पराक्रमी योद्धा;
आंध्र के कृतसंकल्प लड़ाके;
हृदय से देशप्रेमी तुलु लोग; 6

कन्नड़ी और उड़िया;
युद्धभूमि में मौत को भी पछाड़ने वाले मराठे;
उत्तर भारत के मल्ल;
स्वर्ण नगर के देवताओं जैसे दयामय; 7



பூதலம் முற்றிடும் வரையும் — அறப்
போர் விறல் யாவும் மறப்புறும் வரையும்
மாதர்கள் கற்புள்ள வரையும் — பாரில்
மறைவரும் கீர்த்திக் கொள் ரஜபுத்ர வீரர் 8
(தாயின்)

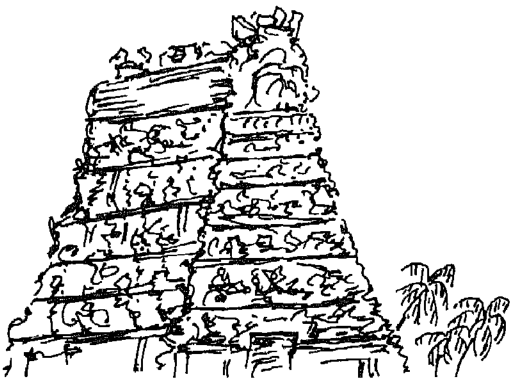
பஞ்சநதத்துப் பிறந்தோர், — முன்னைப்
பார்த்தன் முதல் பலர் வாழ்ந்த நன்னாட்டார்,
துஞ்சும் பொழுதினும் தாயின் — பதத்
தொண்டு நினைந்திடும் வங்கத்தினோரும் 9
(தாயின்)

भूतलम् मुट्रिडुम् वरैयुम् — अऱ-प्
पोर्विऱल् यावुम् मऱप्पुऱुम् वरैयुम्
मादर्गळ् कऱ्पुळ्ळ वरैयुम् — पारिल्
मऱैवरुम् कीर्त्तिकॊळ् रजपुत्र वीरर्
(तायिऩ्) 8

पंचनदत्तु-प् पिऱन्दोर्, — मुऩ्ऩै-प्
पार्त्तऩ् मुदल् पलर् वाऴ्न्द नऩ्ऩाट्टार्,
तुंजुम् पॊऴुदिऩुम् तायिऩ् — पद-त्
तॊण्डु निऩैन्दिडुम् वंगत्तिऩोरुम्
(तायिऩ्) 9

राजपूत जिनके शौर्य का अंत नहीं
जब तक दुनिया कायम है,
नारियों का सदाचार जाज्वल्यमान है,
न्यायसंगत पराक्रम की इज्जत है; 8

पाँच नदियों के देश के लोग,
जहाँ अर्जुन जैसे जाने कितने जननायक हैं;
बंगाल के रहने वाले, जो नहीं भूल सकते
स्वप्न में भी मातृभूमि की सेवा करना; 9



சேர்ந்ததைக் காப்பது காணீர்! — அவர்
    சிந்தையின் வீரம் நிரந்தரம் வாழ்க!
தேர்ந்தவர் போற்றும் பரத — நில
    தேவி துவஜம் சிறப்புற வாழ்க !

(தாயின்)

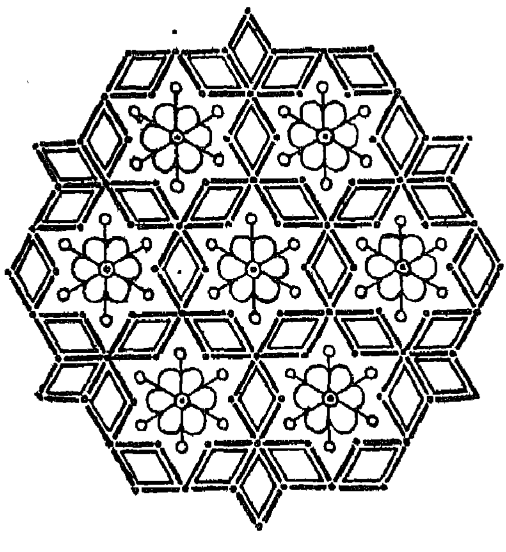
○

सेन्दंदै-क् काप्पदु काणीर् ! — अवर्
    सिन्दैयिन् वीरम् निरन्दरम् वाऴ्ग !
तेन्दंवर् पोट्रुम् भरत — निल
    देवि दुवजम सिऱप्पुऱ वाऴ्ग !

(तायिऩ्)

○

ये सभी लोग इकट्ठे हुए हैं
राष्ट्र ध्वज की रक्षा के लिए।
उनकी दृढ़ प्रतिज्ञ वीरता ज़िन्दाबाद !
जिस ध्वज की आराधना करते हैं वे
उसकी शान बनी रहे सदा-सर्वदा !



4. பாரத தேசம்

பாரத தேசமென்று பெயர் சொல்லுவார்-மிடிப்
பயங் கொல்லுவார் துயர்ப் பகை வெல்லுவார்.

வெள்ளிப் பனி மலையின் மீதுலவுவோம்—அடி
    மேலைக் கடல் முழுதும் கப்பல் விடுவோம் ;
பள்ளித் தலமனைத்தும் கோயில் செய்குவோம் ; எங்கள்
    பாரத தேசமென்று தோள் கொட்டுவோம். 1

(பாரத)

4. भारत देसम्

भारत देसमैन्ऱु पेयर् सॊल्लुवार् — मिडि
भयङ् कॊल्लुवार्; तुयर् पगै वॆल्लुवार् ।

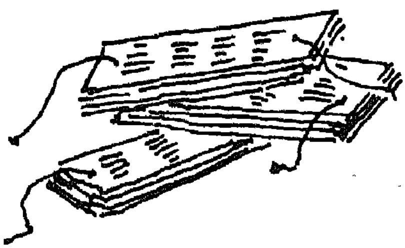
वॆळ्ळि-प् पनिमलैयिन् मीदुलवुवोम् — अडि
    मेलै-क् कडल् मुऴुदुम् कप्पल् विडुवोम्;
पळ्ळि-त् तलमनैत्तुम् कोयिल् सॆय्गुवोम्; — ऍङ्गळ्
    भारत देसमैन्ऱु तोळ् कॊट्टुवोम् ।

(भारत) 1

4. भारत देश

अपने होठों पर भारत देश का नाम लेकर
आओ उतार फेंकें हम अपने भय व ग़रीबी को,
और जीत लें सभी विषादों एवं शत्रुओं को ।

हिमालय की हिम - रजत ऊँचाइयों में हम घूमेंगे ।
हमारे जहाज़ अगाध सागरों में डोलेंगे ।
हम बनाएँगे स्कूल जो होंगे पवित्र विद्या मंदिर,
और गर्व से पीठ ठोंकेंगे अपनी
और नाम लेंगे अपने इस देश भारत का ।
अपने होठों पर भारत देश का नाम लेकर
आओ उतार फेंकें हम अपने भय व ग़रीबी को । *1*



சிங்களத் தீவினுக்கோர் பாலம் அமைப்போம்
சேதுவை மேடுறுத்தி வீதி சமைப்போம்
வங்கத்தில் ஓடிவரும் நீரின் மிகையால்
மையத்து நாடுகளில் பயிர் செய்குவோம். 2

(பாரத)

சிந்து நதியின் மிசை நிலவினிலே
சேர நன்னாட்டிளம் பெண்களுடனே
சுந்தர தெலுங்கினில் பாட்டிசைத்துத்
தோணிகள் ஓட்டி விளையாடி வருவோம். 5

(பாரத)

सिङ्गळ-त् तीविऩुक्कोर् पालम् अमैप्पोम्
सेतुवै मेडुऱ्‌त्ति वीदि समैप्पोम् ;
वंगत्तिल् ओडिवरुम् नीरिऩ् मिगैयाल्
मैयत्तु नाडुगळिल् पयिर् सैय्गुवोम् ।

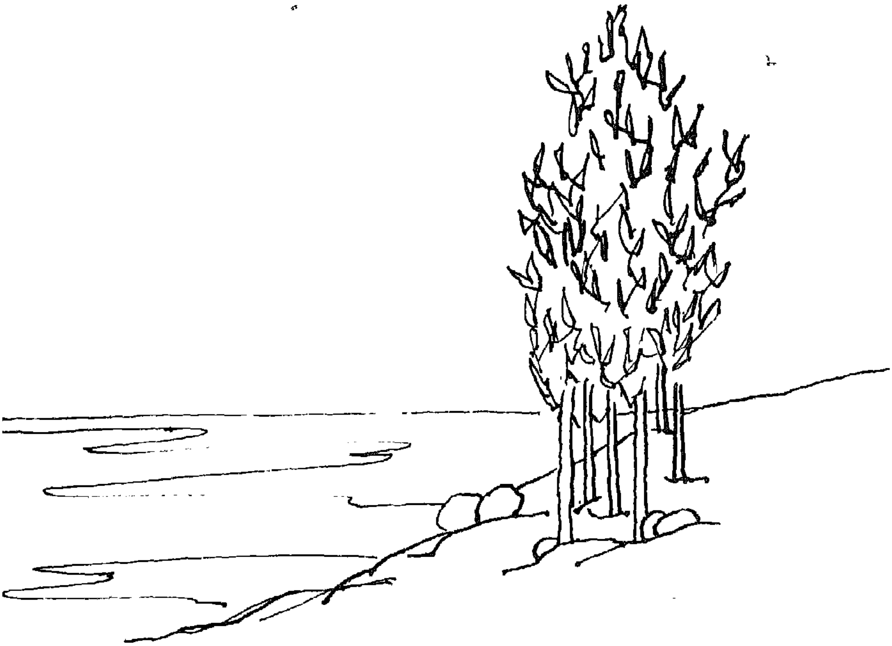
(भारत) 2

सिन्दु नदियिन् मिसै निलविऩिले
सेर नऩ्ऩाट्टिळम् पेण्गळुडने
सुन्दर-त् तैलुंगिऩिल् पाट्टिसैत्तु
तोणिगळोट्टि विळैयाडि वरुवोम् ।

(भारत) 5

श्रीलंका पहुँचने के लिए हम सागर नाप डालेंगे
और सेतु को ऊँचा उठा, उस पर बनाएँगे एक सड़क ।
मध्य भारत की ज़मीन हम सींचेंगे
बंगभूमि की उदार नदियों से ।
अपने होठों पर भारत देश का नाम लेकर
आओ उतार फेंकें हम अपने भय व ग़रीबी को । 2

चाँदनी में सिंधु में करेंगे हम नौका - विहार
साथ होंगी केरल की सुन्दर तन्वंगी युवतियाँ ।
गाएँगे हम श्रुति मधुर तेलुगु में मधुर-मधुर गान ।
अपने होठों पर भारत देश का नाम लेकर
आओ उतार फेंकें हम अपने भय व ग़रीबी को । 5



கங்கை நதிப்புரத்து கோதுமைப் பண்டம்
    காவிரி வெற்றிலைக்கு மாறு கொள்ளுவோம்
சிங்க மராட்டியர்தம் கவிதை கொண்டு
    சேரத்து தந்தங்கள் பரிசளிப்போம் 6
(பாரத)

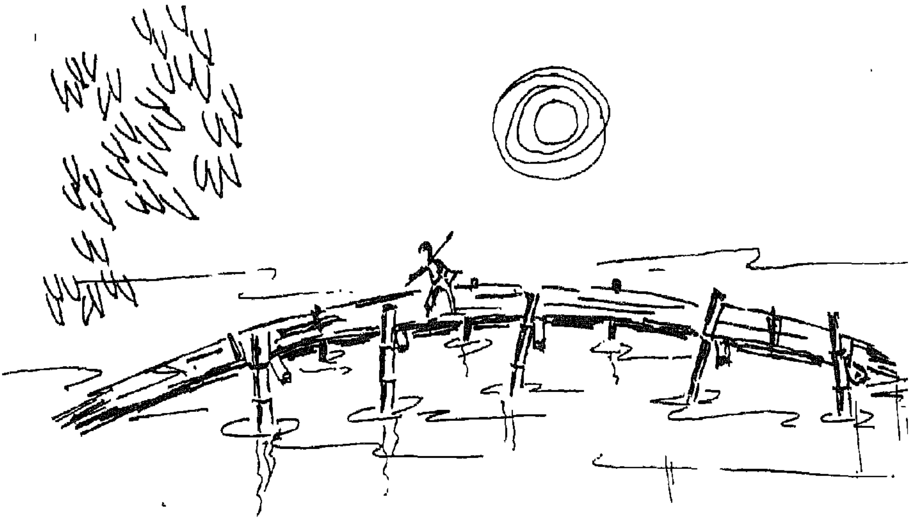
காசி நகர்ப்புலவர் பேசும் உரைதான்
    காஞ்சியில் கேட்பதற்கோர் கருவி செய்வோம்
ராசபுத்தானத்து வீரர் தமக்கு
    நல்லியல் கன்னடத்துத் தங்கம் அளிப்போம் 7
(பாரத)

गंगै नदिप्पुरत्तु-गोदुमै पण्डम्
    काविरि वॆट्रिलैक्कु . माऱुकॊळ्ळुवोम्
सिंग मराट्टियर् तम् कवितैकॊण्डु
    सेरत्तु दन्तङ्गळ् परिसळिप्पोम् ।
(भारत) 6

काशि नगर्-प् पुलवर् पेसुम् उरैदान्
    काञ्चियिल् केट्पदर्कोर् करुवि सैय्वोम्;
रासपुत्तान्नत्तु वीरर् तमक्कु
    नल्लियल् कन्नडत्तु-त् तङ्गम् अळिप्पोम् ।
(भारत) 7

कावेरी-घाटी की कोमल पान की पत्तियों के बदले में
हम गंगा-जमुना के मैदानों का गेहूँ बटोर लेंगे।
केरल के हाथी दाँत के उपहारों के साथ हम करेंगे
अभिनंदन पराक्रमी मराठों की शौर्य गाथा गाने वाले
कवियों का।
अपने होठों पर भारत देश का नाम लेकर
आओ उतार फेंकें हम अपने भय व ग़रीबी को। 6

करेंगे हम कुछ ऐसे उपाय
जिससे कांची में बैठे बैठे
हम सुन सकें वाराणसी के शास्त्रार्थों को।
कर्नाटक के खरे सोने के उपहारों के साथ
हम करेंगे अभिनंदन राजस्थान के वीरों का।
अपने होठों पर भारत देश का नाम लेकर
आओ उतार फेंकें हम अपने भय व ग़रीबी को। 7



ஆயுதம் செய்வோம் நல்ல காகிதம் செய்வோம்
ஆலைகள் வைப்போம் கல்வி சாலைகள் வைப்போம்
ஓயுதல் செய்யோம் தலை சாயுதல் செய்யோம்
உண்மைகள் சொல்வோம் பல வண்மைகள்
செய்வோம். 9
(பாரத)

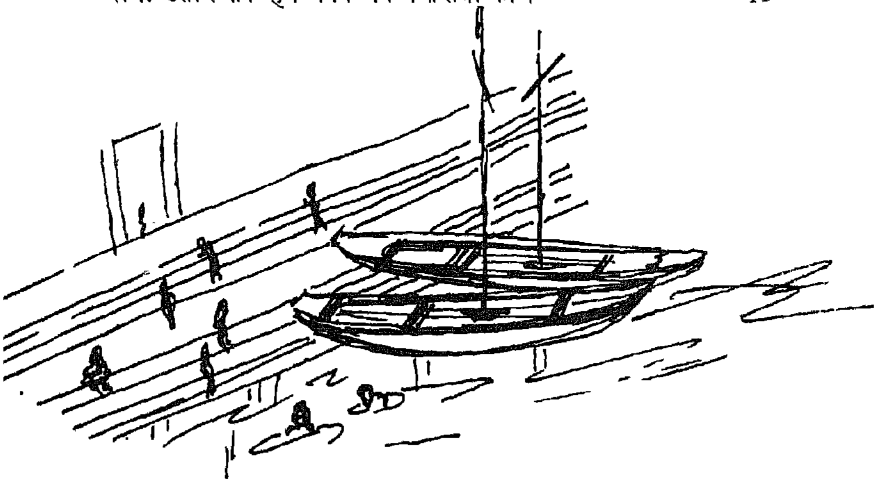
மந்திரம் கற்போம், வினைத் தந்திரம் கற்போம்,
வானை அளப்போம், கடல் மீனை அளப்போம்,
சந்திர மண்டலத்து இயல் கண்டு தெளிவோம்;
சந்தி, தெருபெருக்கும் சாத்திரம் கற்போம். 11
(பாரத)

आयुदम् सैंय्वोम् नल्ल कागिदम् सैंय्वोम्
आलैगळ् वैप्पोम् कल्वि सालैगळ् वैप्पोम्
ओयुदल् सैंय्योम् तलै सायुदल् सैंय्योम्
उण्मैगल् सॊल्वोम् पल वण्मैगळ् सैंय्वोम् ।
(भारत) 9

मन्तिरम् कऱ्पोम्, विऩै-त् तन्तिरम् कऱ्पोम्;
वाऩै अळप्पोम्, कडल् मीऩै अळप्पोम्,
चन्दिर मण्डळत्तु इयल् कण्डु तैळिवोम्,
सन्दि तैरु पैरुक्कुम् सात्तिरम् कऱ्पोम् ।
(भारत) 11

हम बनाएँगे औज़ार और हथियार ।
हम करेंगे काग़ज़ का निर्माण ।
हम खोलेंगे कारख़ाने और स्कूल ।
नहीं करेंगे हम कभी आलस्य या प्रमाद ।
और हृदय से होंगे अति उदार ।
बोलेंगे सत्य, केवल सत्य ।
अपने होठों पर भारत देश का नाम लेकर
आओ उतार फेंकें हम अपने भय व ग़रीबी को । *9*

शास्त्र और विज्ञान दोनों में ही होंगे हम निष्णात,
सागर की अतल गहराइयाँ और आसमान की ऊँचाइयाँ हम
नाप लेंगे;
चाँद के सारे रहस्य हम जान लेंगे,
साथ ही सड़क बुहारने की कला भी हम सीख लेंगे ।
अपने होठों पर भारत देश का नाम लेकर
आओ उतार फेंकें हम अपने भय व ग़रीबी को । *11*



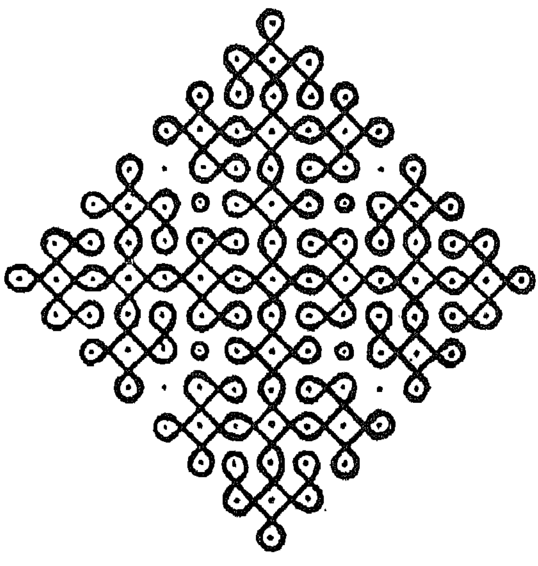
'சாதி இரண்டொழிய வேறில்லை' என்றே
  தமிழ் மகள் சொல்லிய சொல் அமிழ்தம் என்போம்;
நீதி நெறியினின்று பிறர்க்குதவும்
  நேர்மையர் மேலவர் ; கீழவர் மற்றோர். 13
(பாரத)

○

"चादि इरण्डॉऴ़िय वेऱ़िल्लै" ऍन्ऱ़े
  तमिऴ़् मगळ् सॉल्लिय सॉल् अमिऴ़्दम् ऍऩ्बोम्;
नीति नॆऱ़ियिनिऩ्ऱ़ु पिऱ़र्क्कुदवुम्
  नेर्मैयर् मेलवर्; कीऴ़वर् मट्ऱ़ोर्।
(भारत) 13

○

अव्वई के शाश्वत अमर संदेश को
हम निभाएँगे सदा सर्वदा के लिए।
उसने कहा था : केवल दो ही जातियाँ हैं—
एक वे उच्च लोग जो दूसरों की करते हैं सहायता
और रखते हैं मानव मर्यादा का ध्यान।
शेष सभी निकृष्ट हैं छोटे लोग।
अपने होठों पर भारत देश का नाम लेकर
आओ उतार फेंकें हम अपने भय व ग़रीबी को। *13*



5. போகின்ற பாரதமும் வருகின்ற பாரதமும்

வலிமையற்ற தோளினாய் போ போ போ
மார்பிலே ஒடுங்கினாய் போ போ போ
பொலிவிலா முகத்தினாய் போ போ போ
பொறியிழந்த விழியினாய் போ போ போ
ஒலியிழந்த குரலினாய் போ போ போ
ஒளியிழந்த மேனியாய் போ போ போ
கிலி பிடித்த நெஞ்சினாய் போ போ போ
கீழ்மை யென்றும் வேண்டுவாய் போ போ போ

1

5. पोगिऩ्र भारतमुम् वरुगिऩ्र भारतमुम्

वलिमै अट्र तोळिऩाय् पो पो पो
मार्बिले ऑडुङ्गिऩाय् पो पो पो
पॉलिविला मुगत्तिऩाय् पो पो पो
पॉऱियिऴन्द विऴियिऩाय् पो पो पो
ऑलियिऴन्द कुरलिऩाय् पो पो पो
ऑळियिऴन्द मेऩियाय् पो पो पो
किलि पिडित्त नॆञ्जिऩाय् पो पो पो
कीऴ्मै ऎऩ्ऱुम् वेण्डुवाय् पो पो पो। 1

5. जा, जर्जरित भारत ! जा !
और
आ, नव भारत, आ !

ओ दुर्बल कंधों वाले
जा जा जा, जा भाग !
ओ दबे हुए सीने वाले
जा जा जा, जा भाग !
ओ तेजहीन मुख वाले
जा जा जा, जा भाग !
ओ निष्प्रभ आँखों वाले
जा जा जा, जा भाग !
ओ कातर वाणी वाले
जा जा जा, जा भाग !
ओ कांतिहीन तन वाले
जा जा जा, जा भाग !
ओ भयभीत हृदय वाले
जा जा जा, जा भाग !
ओ, ओछी हरकत वाले
जा जा जा, जा भाग !

ஒளி படைத்த கண்ணினாய் வா வா வா
உறுதி கொண்ட நெஞ்சினாய் வா வா வா
களி படைத்த மொழியினாய் வா வா வா
கடுமை கொண்ட தோளினாய் வா வா வா
தெளிவு பெற்ற மதியினாய் வா வா வா
சிறுமை கண்டு பொங்குவாய் வா வா வா
எளிமை கண்டு இரங்குவாய் வா வா வா
ஏறு போல் நடையினாய் வா வா வா
5

○

ऑळि पडैत्त कण्णिऩाय् वा वा वा
उऱुदि कॊण्ड नॆञ्जिऩाय् वा वा वा
कळि पडैत्त मॊऴियिऩाय् वा वा वा
कडुमैकॊण्ड तोळिऩाय् वा वा वा
तॆळिवु पॆट्र मदियिऩाय् वा वा वा
सिऱुमै कण्डु पॊङ्गुवाय् वा वा वा
ऎळिमै कण्डु इरङ्गुवाय् वा वा वा
एऱु पोल् नडैयिऩाय् वा वा वा। 5

○

कांतियुक्त आँखों वाले भारत,
तू आ आ आ !
दृढ़ संकल्पों वाले भारत,
तू आ आ आ !
मनमोहक वाणी वाले भारत,
तू आ आ आ !
शक्तिवान स्कंधों वाले भारत,
तू आ आ आ !
निर्मल मति वाले भारत,
तू आ आ आ !
ओछेपन को देख खौलने वाले भारत,
तू आ आ आ !
दीनों के दुख में रोने वाले भारत,
तू आ आ आ !
वृषभ-शान से चलने वाले भारत,
तू आ आ आ ! *5*

6. விடுதலை

விடுதலை ! விடுதலை ! விடுதலை !
பறையருக்கும் இங்கு தீயர்
புலையருக்கும் விடுதலை ;
பரவரோடு குறவருக்கும்
மறவருக்கும் விடுதலை ;
திறமை கொண்ட தீமையற்ற
தொழில் புரிந்து யாவரும்
தேர்ந்த கல்வி ஞானம் எய்தி
வாழ்வம் இந்த நாட்டிலே. 1

(விடுதலை)

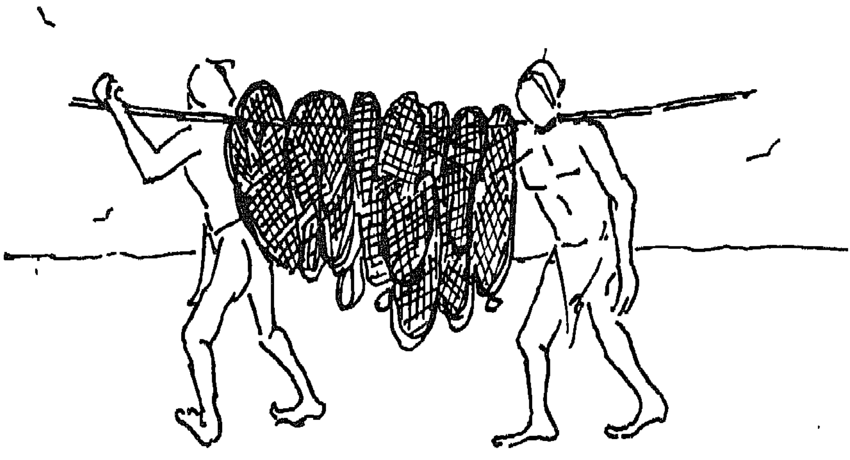
6. विडुदलै

विडुदलै ! विडुदलै ! विडुदलै !
पऱैयरुक्कुम् इंगु तीयर्
पुलैयरुक्कुम् विडुदलै ;
परवरोडु कुऱवरुक्कुम्
मऱवरुक्कुम् विडुदलै ;
तिऱमै कॉण्ड तीमैयट्ऱ
तॉऴिल् पुरिन्दु यावरुम्
तेर्न्द कल्वि ज्ञानमॅय्दि
वाऴ्वमिन्द नाट्टिले !

(विडुदलै) 1

6. आज़ादी

आज़ादी ! आज़ादी ! आज़ादी !
परय्यरों, तियरों और पुलय्यरों के लिए आज़ादी।
परवरों, कुरवरों और मरवरों के लिए आज़ादी।
करें हम ऐसा श्रम
जिसमें हो कौशल
नहीं हो कोई हानि।
हम पूर्ण रूप से शिक्षित हो लें,
बुद्धिमान बनें और इसी धरती पर रहें।
आज़ादी ! आज़ादी ! आज़ादी ! *1*



ஏழையென்றும் அடிமை யென்றும்
எவனும் இல்லை ஜாதியில் ;
இழிவு கொண்ட மனிதரென்பது
இந்தியாவில் இல்லையே ;
வாழி கல்வி செல்வம் எய்தி
மன மகிழ்ந்து கூடியே,
மனிதர் யாரும் ஒரு நிகர்
சமான மாக வாழ்வமே. 2

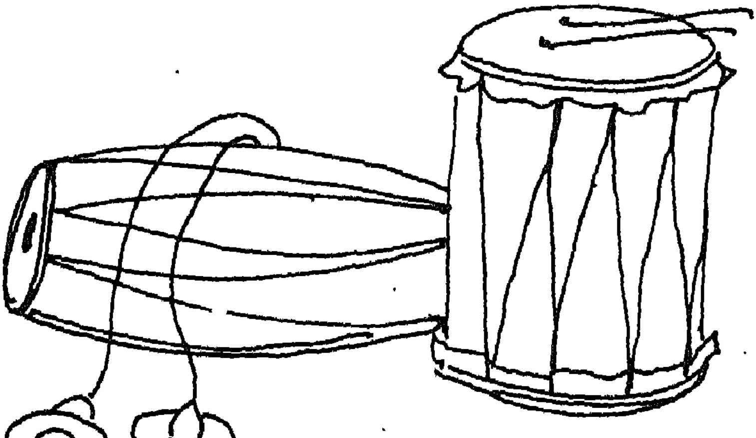
(விடுதலை)

एऴै ऍऩ्ऱुम् अडिमै ऍऩ्ऱुम्
ऍवनुमिल्लै, जातियिल् ;
इऴिवु कॊण्ड मऩिदरॆऩ्बदु
इन्दियाविल् इल्लैये;
वाऴि कल्वि सॆल्वमॆय्दि
मन मगिऴ्न्दु कूडिये,
मऩिदर् यारुम् ऒरु निगर्
समाऩमाग वाऴ्वमे ।

(विडुदलै) 2

अब ना कोई दीन रहेगा, नहीं रहेगा दास।
भारत में कोई ना ऐसा, जो जन्म से हो छोटा।
हर कोई विद्यावान और धनवान बनेगा।
हम लोग खुश होकर एक दूसरे से मिले जुलेंगे
और बराबरी के साथ रहेंगे।
आज़ादी ! आजादी ! आजादी !

2



மாதர் தம்மை இழிவு செய்யும்
    மடமையை கொளுத்துவோம் ;
வைய வாழ்வு தன்னில் எந்த
    வகையிலும் நமக்குளே
தாதர் என்ற நிலைமை மாறி
    ஆண்களோடு பெண்களும்
ஸரிநிகர் சமானமாக
    வாழ்வம் இந்த நாட்டிலே 3

(விடுதலை)

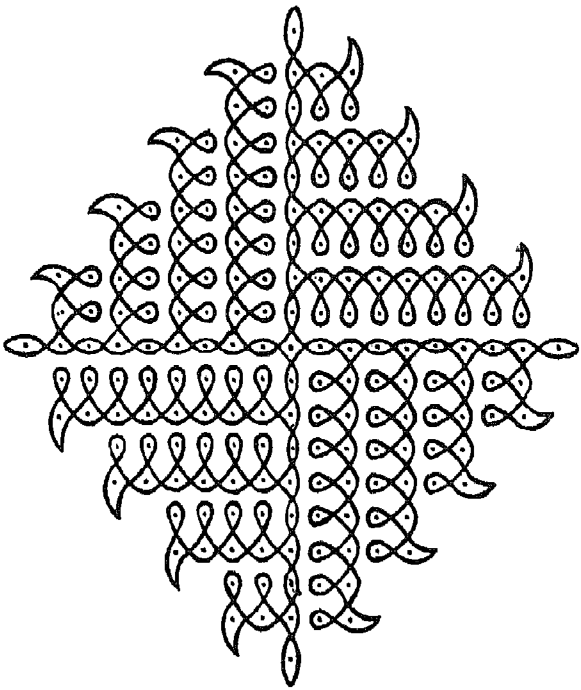
○

मादर् तम्मै इऴिवु सॆय्युम्
    मडमैयै-क् कॊळुत्तुवोम्;
वैय वाऴ्वु तन्निल् ऍन्द
    वगैयिलुम् नमक्कुळे
तादरॆन्ऱ् निलैमै माऱि
    आण्गळोडु पॆण्गळुम्
सरिनिगर् समानमाग
    वाऴ्वम् इन्द नाट्टिले

(विडुदलै) 3

○

स्त्रियों को अपमानित करने वाली
इस मूर्ख परम्परा को हम नष्ट कर देंगे ।
गुलामी करने की, छोटे बन कर रहने की परिपाटी अब समाप्त ।
मर्द और औरत सभी इस देश में
अब बराबरी के दरजे से रहेंगे ।
आज़ादी ! आज़ादी ! आज़ादी ! *3*



7. சுதந்திரப் பள்ளு

ஆடுவோமே பள்ளுப் பாடுவோமே
ஆனந்த சுதந்திரம் அடைந்து விட்டோம் என்று
(ஆடுவோமே)

பார்ப்பானை ஐயரென்ற காலமும் போச்சே—வெள்ளைப்
பரங்கியை துரையென்ற காலமும் போச்சே—பிச்சை
ஏற்பாரை பணிகின்ற காலமும் போச்சே நம்மை
ஏய்ப்போருக்கேவல் செய்யும் காலமும் போச்சே. 1
(ஆடுவோமே)

7. सुतन्तिर-प् पळ्ळु

आड्वोमे — पळ्ळु-प् पाड्वोमे;
आऩन्द सुतन्तिरम् अडैन्दु विट्टोमॆऩ्ऱु
(आड्वोमे)

पार्प्पाऩै अय्यरॆऩ्ऱ कालमुम् पोच्चे — वॆळ्ळै-प्
परंगियै दुरैयॆऩ्ऱ कालमुम् पोच्चे — पिच्चै
एऱ्पारै पणिगिऩ्ऱ कालमुम् पोच्चे — नम्मै
एय्प्पोरुक्केवल् सॆय्युम् कालमुम् पोच्चे ।
(आड्वोमे) 1

7. आज़ादी का एक 'पल्लु'

आओ नाचें और पल्लु गाएँ।
जो आज़ादी हमने ली है उसकी खुशी मनाएँ।
आओ नाचें और पल्लु गाएँ।
वे दिन दूर गए जब ब्राह्मण कहलाता था मालिक।
वे दिन दूर गए जब गोरी चमड़ी वाला था आका।
वे दिन दूर गए जब झुकना पड़ता था सबको नीचों के आगे।
वे दिन दूर गए जब ताबेदारी करनी होती थी धोखेबाजों के आगे।
आओ नाचें और पल्लु गाएँ।
जो आज़ादी हमने ली है उसकी खुशी मनाएँ।



எங்கும் சுதந்திரம் என்பதே பேச்சு—நாம்
எல்லோரும் சமமென்பது உறுதியாச்சு ;
சங்கு கொண்டே வெற்றி ஊதுவோமே—இதைத்
தரணிக்கெல்லாம் எடுத்து ஓதுவோமே. 2
(ஆடுவோமே)

உழவுக்கும் தொழிலுக்கும் வந்தனை செய்வோம்—வீணில்
உண்டு களித்திருப்போரை நிந்தனை செய்வோம்.
விழலுக்கு நீர் பாய்ச்சி மாய மாட்டோம்—வெறும்
வீணருக்கு உழைத்துடலம் ஓய மாட்டோம். 4
(ஆடுவோமே)

ऍङ्गुम् सुतन्तिरम् ऍन्ऩ्बदे पेच्चु — नाम्
ऍल्लोरुम् सममॆन्ऩ्बदु उऱुदियाच्चु;
संगु कॊण्डे वॆट्रि ऊदुवोमे — इदै-त्
तरणिक्कॆल्लाम् ऍडुत्तु ओदुवोमे।

(आडुवोमे) 2

उऴवुक्कुम् तॊऴिलुक्कुम् वन्दनै सॆय्वोम् — वीणिल्
उण्डु कळित्तिरुप्पोरै निन्दनै सॆय्वोम्।
विऴलुक्कु नीर् पाय्च्चि मायमाट्टोम् — वॆऱुम्
वीणरुक्कु उऴैत्तुडलम् ओयमाट्टोम् ।

(आडुवोमे) 4

सभी ओर आज़ादी की ही अब चर्चा है ।
हम सभी बराबर हैं, यह बात हो गई पक्की ।
विजयघोष का शंख बजाकर दुनिया को बतलाएँ ।
आओ नाचें और पल्लु गाएँ ।
जो आज़ादी हमने ली है उसकी खुशी मनाएँ । 2

बहा पसीना तन का अपने, जो खेतों में मरता है
उठा हथौड़े, कर मज़दूरी, उद्योगों में खटता है
उसकी जय जयकार करेंगे, उस पर सब कुछ वारेंगे
जो हराम की खाता आया, उसको हम धिक्कारेंगे ।
अब न झुकेंगे, नहीं सहेंगे, कम्बख्तों के शोषण को ।
आओ नाचें और पल्लु गाएँ ।
जो आज़ादी हमने ली है, उसकी खुशी मनाएँ । 4



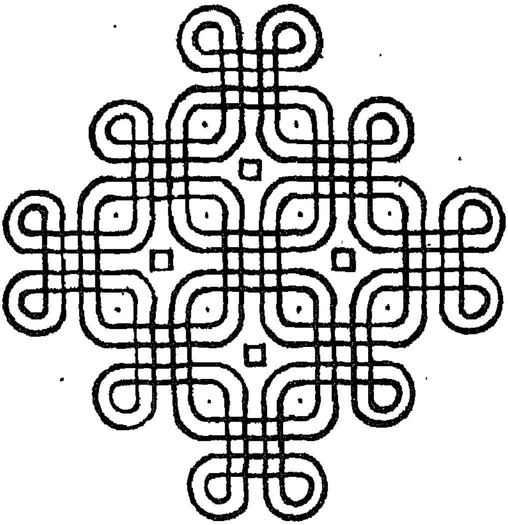
நாமிருக்கும் நாடு நமதென்பது அறிந்தோம்—இது
நமக்கே உரிமையாம் என்பதறிந்தோம்—இந்த
பூமியில் எவர்க்கும் இனி அடிமை செய்யோம்—பரி
பூரணனுக்கே அடிமை செய்து வாழ்வோம். 5
(ஆடுவோமே)

○

नामिरुक्कुम् नाडु नमदॆऩ्बदु अऱिन्दोम् — इदु
नमक्के उरिमैयाम् ऍऩ्बदऱिन्दोम् — इन्द
भूमियिल् ऍवर्कुमिऩि अडिमै सॆय्योम् — परि
पूरणऩुक्के अडिमै सॆय्दु वाऴ्वोम्।
(आडुवोमे) 5

○

अब तो हम यह समझ गए हैं, यह सारी धरती अपनी
इस पर है अधिकार हमारा, हम ही हैं इसके स्वामी।
अब न किसी के दास बनेंगे, नहीं दबेंगे, नहीं सहेंगे,
केवल उसको मानेंगे, जो है जल थल नभ का स्वामी !
आओ नाचें और पल्लु गाएँ।
जो आज़ादी हमने ली है, उसकी खुशी मनाएँ। 5



8. அச்சமில்லை

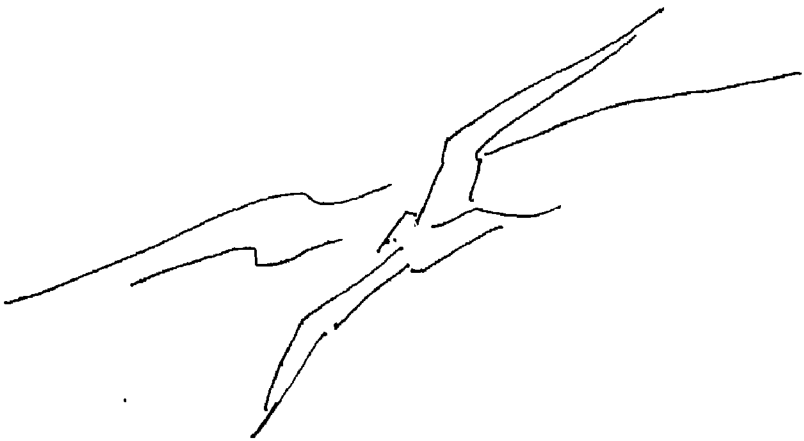
அச்சமில்லை அச்சமில்லை
அச்சமென்பதில்லையே .
இச்சகத்து உளோரெலாம்
எதிர்த்து நின்ற போதினும்,
அச்சமில்லை அச்சமில்லை
அச்சமென்பதில்லையே.
துச்சமாக எண்ணி நம்மை
தூறு செய்த போதினும்,
அச்சமில்லை அச்சமில்லை
அச்சமென்பதில்லையே .

8. अच्चमिल्लै

अच्चमिल्लै अच्चमिल्लै
अच्चमॆंऩ्बदिल्लैये ।
इच्चगत्तु उळोरॆलाम्
ऍदिर्त्तु निऩ्ऱ पोदिऩुम्,
अच्चमिल्लै अच्चमिल्लै
अच्चमॆंऩ्बदिल्लैये ।
तुच्चमाग ऍण्णि नम्मै-त्
तूऱु सॆय्द पोदिऩुम्,
अच्चमिल्लै अच्चमिल्लै
अच्चमॆंऩ्बदिल्लैये ।

8. निर्भय

निर्भय, निर्भय, निर्भय !
चाहे पूरी दुनिया हमारे ख़िलाफ़ खड़ी हो जाए,
निर्भय, निर्भय, निर्भय !
चाहे हमें अपशब्द सुनने को मिलें और हम ठुकराए जाएँ,
निर्भय, निर्भय, निर्भय !



இச்சை கொண்ட பொருளெலாம்
இழந்து விட்ட போதிலும்
அச்சமில்லை அச்சமில்லை
அச்சமென்பதில்லையே 1
நச்சை வாயிலே கொணர்ந்து
நண்பரூட்டு போதினும்,
அச்சமில்லை அச்சமில்லை
அச்சமென்பதில்லையே
உச்சி மீது வானிடிந்து
வீழுகின்ற போதினும்,
அச்சமில்லை அச்சமில்லை
அச்சமென்பதில்லையே. 2

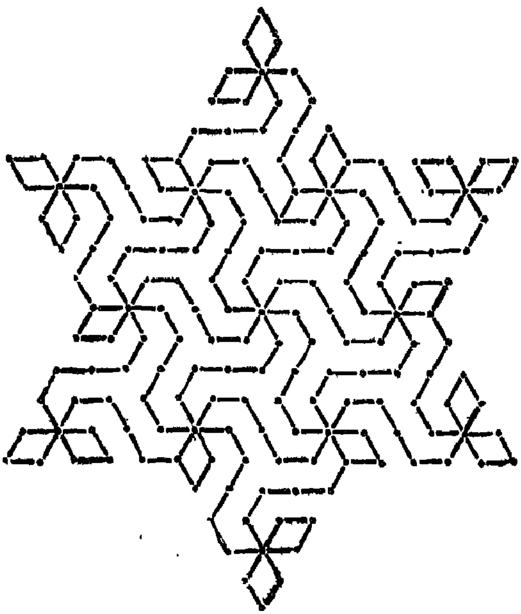
○

इच्चै कॊण्ड पॊरुळॆलाम्,
इऴन्दु विट्ट पोदिलुम्,
अच्चमिल्लै अच्चमिल्लै अच्चमॆन्बदिल्लैये । 1
नच्चै वायिले कॊणर्न्दु
नण्बरूट्टु पोदिनुम् ,
अच्चमिल्लै अच्चमिल्लै अच्चमॆन्बदिल्लैये ।
उच्चिमीदु वानिडिन्दु
वीऴुगिन्ऱ पोदिनुम् ,
अच्चमिल्लै अच्चमिल्ले अच्चमॆन्बदिल्लैये । 2

○

चाहे हम जीवन की सभी सुविधाओं से वंचित कर दिए जाएँ,
निर्भय, निर्भय, निर्भय ! 1

चाहे हमारे अपने सगे ही हमें विष देने लग जाएँ,
निर्भय, निर्भय, निर्भय !
चाहे हमारे सर पर आसमान ही क्यों न फटने लग जाए,
निर्भय, निर्भय, निर्भय ! 2



9. புதிய ருஷியா

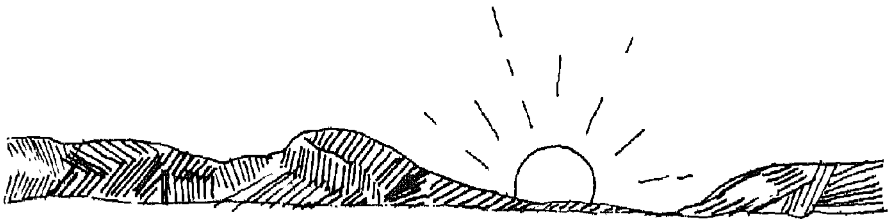
மாகாளி பராசக்தி உருசிய நாட் -
　　டினில் கடைக்கண் வைத்தாள், அங்கே
ஆகாவென்று எழுந்தது பார் யுகப் புரட்சி ;
　　கொடுங்காலன் அலறி வீழ்ந்தான் ;
வாகான தோள் புடைத்தார் வானமரர் ;
　　பேய்களெல்லாம் வருந்திக் கண்ணீர்
போகாமல் கண் புகைந்து மடிந்தனவாம் ;
　　வையகத்தீர், புதுமை காணீர் ! 1

9. पुदिय रुशिया

माकाळि पराशक्ति रुशिया नाट्-
　　टिऩिल् कडैक्कण् वैत्ताळ्, अंगे
आगावेऩ्ऱु ऍऴुन्ददु पार् युग-प् पुरट्चि ;
　　कॊँडुँकालऩ् अलऱि वीऴ्न्दान्;
वागाऩ तोळ् पुडैत्तार् वाऩमरर्;
　　पेय्गळॆल्लाम् वरुन्दि-क् कण्णीर्
पोगामल् कण्पुगैन्दु मडिन्दऩवाम्;
　　वैयगत्तीर्, पुदुमै काणीर् ! 1

9. नया रूस

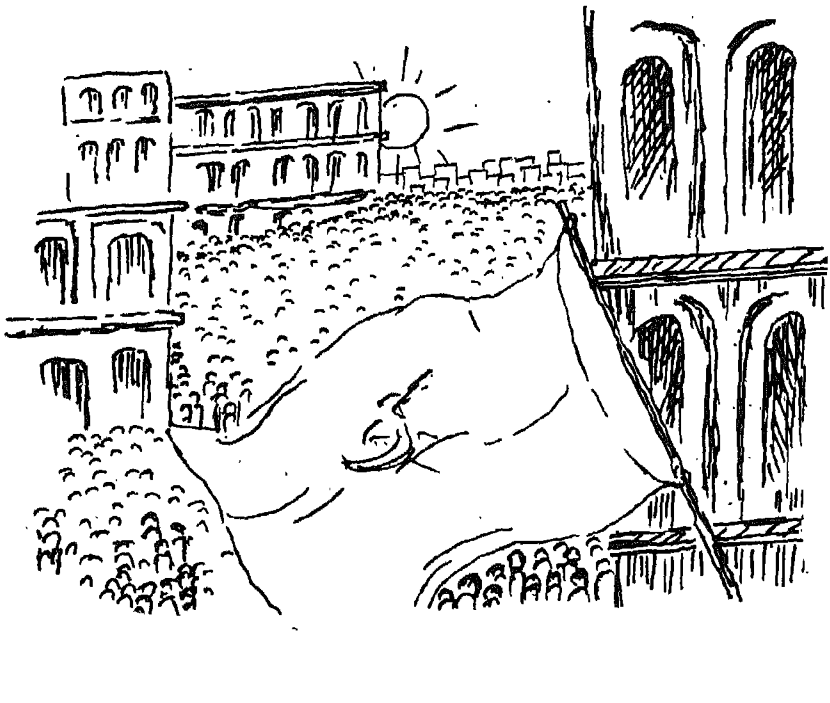
परम शक्तिमान देवी पराशक्ति,
उसने अपनी सौम्य दयालु दृष्टि
रूस की ओर डाली,
और देखो, एक क्रांति आ गई
जो लाई अपने साथ नव युग !
तानाशाह ज़ालिम ने गिरते-गिरते चीख मारी।
देवताओं के तेजस्वी कंधे
खुशी और गर्व से फूल गए,
जबकि आसुरी शक्तियाँ आँसू बहाने लगीं
और दृष्टि खोकर विलुप्त हो गईं।
ओ दुनिया के लोगो,
देखो इस नए करिश्मे को ! 1



இமயமலை வீழ்ந்தது போல் வீழ்ந்து விட்டான்.
ஜார் அரசன் ; இவனைச் சூழ்ந்து
சமயமுள படிக்கெல்லாம் பொய் கூறி
அறம் கொன்று சதிகள் செய்த
சுமடர் சட சடவென்று சரிந்திட்டார்.
புயல் காற்று சூறை தன்னில்
திமுதிம் என மரம் விழுந்து காடெல்லாம்
விறகான செய்திபோலே.

इमयमलै वीऴ्न्ददुपोल् वीऴ्न्दु विट्टान्
जार् अरसऩ्; इवनै-च् चूऴ्न्दु
समयमुळ पडिक्कॆल्लाम् पॊय् कूऱि
अऱं कॊऩ्ऱु सदिगळ् सॆय्द
सुमडर् सडसडवॆऩ्ऱु सरिन्दिट्टार् ।
पुयल् काट्ऱु-च् चूऱै तऩ्ऩिल्
तिमुतिमु ऎऩ मरम् विऴुन्दु काडॆल्लाम्
विऱगाऩ सॆय्दि पोले ।

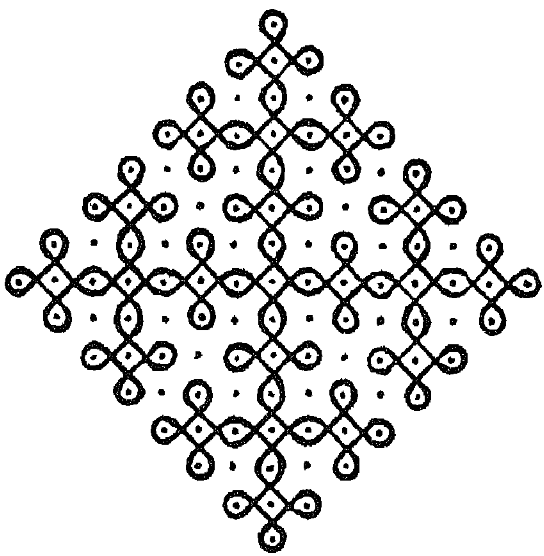
जैसे हिमालय ढह गया हो,
शासक ज़ार का पतन हुआ ऐसे ही ।
और उसे घेरे रहने वाले नीच कमीने,
जो उसे खुश रखने के लिए झूठ बोलते थे
और सद्गुणों का घोर अपमान करते थे,
सभी के सभी गए रसातल को !
यह ऐसे ही था जैसे कोई बहुत बड़ा
बवंडर पूरे ज़ंगल को मथ डाले
और बड़े-बड़े पेड़ों को उखाड़ फेंके ।



குடி மக்கள் சொன்னபடி குடி வாழ்வு
மேன்மையுறக் குடிமை நீதி
கடியொன்றில் எழுந்தது பார்; குடியரசென்று
உலகறிய கூறிவிட்டார் ;
அடிமைக்கு தளையில்லை யாருமிப்போது
அடிமையில்லை அறிக என்றார் ;
இடிபட்ட சுவர் போலே கலி விழுந்தான்,
கிருதயுகம் எழுக மாதோ! 6

कुडिमक्कळ् सॉऩ्ऩपडि कुडिवाऴ्वु
मेऩ्मैयुऱ-क् कुडिमै नीति
कडियॉऩ्ऱिल् ऍऴुन्ददु पार्; कुडियरसु ऍऩ्ऱु
उलगऱिय-क् कूऱि विट्टार् ;
अडिमैक्कु-त् तळैयिल्लै, यारुमिप्पोदु
अडिमै इल्लै अऱिग ऍऩ्ऱार्;
इडिपट्ट चुवर् पोले कलि विऴुन्दान्,
किरुद युगम् ऍऴुग मादो ! 6

अचानक सब कुछ बदल गया।
अब बनाए जाते हैं कानून लोगों की उन्नति के लिए,
लोगों की इच्छा के अनुसार।
उन्होंने घोषणा की है कि सारी दुनिया जान जाए
कि उनके यहाँ है शासन जनता का।
वहाँ नहीं हैं दासता की बेड़ियाँ,
न ही कोई गुलाम।
जैसे कोई दीवाल गिरा दी जाए,
कलियुग ढह गया।
और स्वर्ण युग का नवविहान आ गया। 6



10. மகாத்மா காந்தி

வாழ்க நீ! எம்மான், இந்த
வையத்து நாட்டிலெல்லாம்
தாழ்வுற்று வறுமை மிஞ்சி
விடுதலை தவறிக் கெட்டுப்
பாழ்பட்டு நின்றதாம் ஓர்
பாரத தேசம் தன்னை
வாழ்விக்க வந்த காந்தி
மகாத்மா! நீ வாழ்க! வாழ்க! 1

○

10. महात्मा गांधी

वाऴ्ग नी ! ऍम्मान्, इन्द
वैयत्तु नाट्टिलॅल्लाम्
ताऴ्वुट्रु वऱुमै मिंजि
विडुदलै तवरि-क् कॅट्टु-प्
पाऴ्पट्टु निऩ्ऱदाम् ओर्
भारत देसम् तऩ्ऩै
वाऴ्विक्क वन्द गांधी
महात्मा ! नी वाऴ्ग ! वाऴ्ग ! 1

○

10. महात्मा गांधी

चिरजीवी हो, हे स्वामी !
तू भारत को मुक्त कराने आया
तू भारत में नव प्राण डालने आया
भारत—जिसे उजाड़ा जा चुका है
भारत—जिसे गिराया जा चुका है
भारत—जिसे दुनिया का सबसे खराब देश—
सबसे ग़रीब और गुलाम देश—
बनाया जा चुका है।
हे महात्मा ! हे मुक्तिदाता !
तू अमर रह ! 1

11. சுதந்திர தேவியின் துதி

இதந்தரு மனையின் நீங்கி
　　இடர் மிகு சிறைப்பட்டாலும்,
பதந்தரு இரண்டும் மாறிப்
　　பழிமிகுத்து இழிவுற்றாலும்,
விதந்தரு கோடி இன்னல்
　　விளைந்தெனை அழித்திட்டாலும்,
சுதந்திர தேவி! நின்னைத்
　　தொழுதிடல் மறக்கிலேனே. 1

○

11. सुतन्तिर देवियिऩ् तुति

इतन्तरु मऩैयिऩ् नींगि
　　इडर् मिगु सिऱैप्पट्टालुम्,
पतन्तरु इरण्डुम् माऱि-प्
　　पऴि मिगुत्तु इऴिवुट्ऱालुम्,
विदन्तरु कोडि इऩ्ऩल्
　　विळैन्देऩै अऴित्तिट्टालुम् ,
सुतन्तिर देवि ! निऩ्ऩै-त्
　　तॊऴुदिडल् मऱक्किलेऩे । 1

○

11. आज़ादी की देवी के लिए एक प्रार्थना

चाहे करना पड़े त्याग
मुझको घर की सुविधाओं का
और जेल के भीतर मुझको लाख सताया जाए।
चाहे छीन सुखों को मुझसे, मुझे प्रताड़ित
औ अपमानित कितना भी दिन-रात किया जाए।
संकट पर संकट आ आकर मुझे ख़तम करना चाहें
फिर भी, ओ आज़ादी की देवी !
भूल नहीं सकता मैं करना अर्पित बोल प्रार्थना औ स्तुति के। I

12 சரஸ்வதி தேவியின் புகழ்

வெள்ளைத் தாமரை பூவில் இருப்பாள்,
    வீணை செய்யும் ஒலியில் இருப்பாள்;
கொள்ளை இன்பம் குலவு கவிதை
    கூறு பாவலர் உள்ளத்திருப்பாள்;

உள்ளதாம் பொருள் தேடி உணர்ந்தே
    ஓதும் வேதத்தின் உள் நின்றொளிர்வாள் ;
கள்ளமற்ற முனிவர்கள் கூறும்
    கருணை வாசகத்து உட்பொருள் ஆவாள். 1

(வெள்ளைத்)

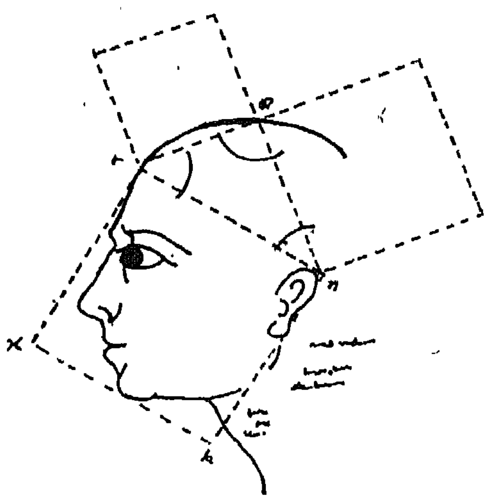
12. सरस्वति देवियिऩ् पुगऴ्

वॆंळ्ळै तामरै-प् पूविल् इरुप्पाळ्,
    वीणै सॆय्युम् ऒलियिल् इरुप्पाळ्;
कॊळ्ळै इऩ्बम् कुलवु कवितै
    कूऱु पावलर् उळ्ळत्तिरुप्पाळ् ;
उळ्ळदाम् पॊरुळ् तेडि उणर्न्दे
    ओदुम् वेदत्तिऩ् उळ् निऩ्ऱॊळिर्वाळ् ;
कळ्ळमट्र मुऩिवर्गळ् कूऱुम्
    करुणै वासगत्तु उट्पॊरुळ् आवाळ् ।

(वॆंळ्ळै) 1

12. सरस्वती-वन्दना

निष्कलंक श्वेत पद्म पर आसीन है देवी सरस्वती ।
वीणा की हर लय तान में समाई है देवी सरस्वती ।
आनंद अतिरेक में कविता रचने वाले कवियों
के हृदय में विराजती है वह देवी सरस्वती ।
सत्य को प्रकाशित करने वाले वेदों के मंत्रोच्चार में,
सदाचारी संतों के करुणामय शब्दों में
बसी है देवी सरस्वती ।
निष्कलंक श्वेत पद्म पर आसीन है देवी सरस्वती । 1



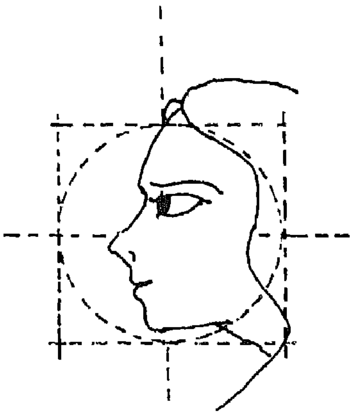
வீடு தோறும் கலையின் விளக்கம்,
    வீதி தோறும் இரண்டொரு பள்ளி,
நாடு முற்றிலும் உள்ளன ஊர்கள்
    நகரங்களெங்கும் பல பல பள்ளி;
தேடு கல்வியிலாத ஓர் ஊரை
    தீயினுக்கு இறையாக மடுத்தல்
கேடு தீர்க்கும் அமுதம் என் அன்னை
    கேண்மை கொள்ள வழி இவை கண்டீர் 6

(வெள்ளைத்)

वीडु तोरुम् कलैयिऩ् विळक्कम्,
    वीदि तोरुम् इरण्डॉरु पळ्ळि;
नाडु मुट्रिलुम् उळ्ळऩ ऊर्गळ्
    नगर्ङ्गळॆङ्गुम् पल पल पळ्ळि;
तेडु कल्वियिलाद ऑर् ऊरै-त्
    तीयिऩुक्कु इरैयाग मडुत्तल्
केडु तीर्क्कुम् अमुदम् ऍऩ् अऩ्ऩै
    केण्मैकॉळ्ळ वऴि इवै कण्डीर्।

(वैळ्ळै) 6

हर घर झंकृत हो संस्कृति से,
हों स्कूल सभी गलियों में ।
हमारे इस देश में हैं अनेकों ग्राम और नगर,
सबमें हों स्कूल—विद्या के मंदिर ।
देखो, ढूँढ़ो, मिले बिना स्कूलों वाला गाँव—
लगा दो आग, भसम हो जाने दो ।
सहज प्रसन्न होंगी इन विधियों से विद्या की देवी
जिनकी अमृत-कृपा से पाप-विमोचन होगा ।
निष्कलंक श्वेत पद्म पर आसीन है देवी सरस्वती । 6



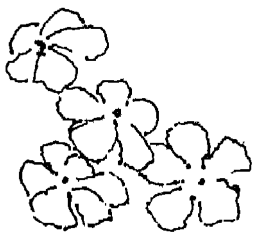
இன்னருங் கனி சோலைகள் செய்தல்
　　இனிய நீர்த்தண் சுனைகள் இயற்றல்;
அன்ன சத்திரம் ஆயிரம் வைத்தல்
　　ஆலயம் பதினாயிரம் நாட்டல்;
பின்னர் உள்ள தருமங்கள் யாவும்
　　பெயர் விளங்கி ஒளிர நிறுத்தல்
அன்ன யாவினும் புண்ணியம் கோடி
　　ஆங்கோர் ஏழைக்கு எழுத்தறிவித்தல். 9

(வெள்ளை)

इन्नरुंकनि सोलैगळ् सैय्दल्
　　इनिय नीर्त्तण् सुनैगळ् इयट्रल् ;
अन्नसत्तिरम् आयिरम् वैत्तल्
　　आलयम् पदिनायिरम् नाट्टल् ;
पिन्नर् उळ्ळ दरुमंगळ् यावुम्
　　पॅयर् विळंगि ऑळिर निरुत्तल्,
अन्नयाविनुम् पुण्णियम् कोडि
　　आंगोर् एऴैक्कु ऍऴुत्तरिवित्तल्।

(वैळ्ळै) 9

मीठे फल देने वाले बग़ीचे लगवाना,
गहरे कुएँ और बावली खुदवाना,
बेघर और भूखों के लिए रैन बसेरे बनवाना,
असंख्य मंदिरों को प्रतिष्ठापित करवाना,
दानियों के नाम अमर कर देने वाले पुण्य कर्म व
बीसियों प्रकार के दान धर्म करना-करवाना—
ये सभी पुण्य के कार्य हैं,
लेकिन सबसे बढ़कर है
किसी ग़रीब को शिक्षित करने का काम।
निष्कलंक श्वेत पद्म पर आसीन है देवी सरस्वती। 9



நிதி மிகுந்தவர் பொற்குவை தாரீர் !
நிதி குறைந்தவர் காசுகள் தாரீர் !
அதுவும் அற்றவர் வாய்ச் சொல் அருளீர் !
ஆண்மையாளர் உழைப்பினை நல்கீர் !
மதுரத் தேமொழி மாதர்களெல்லாம்
வாணி பூசைக் குரியனபேசீர் !
எதுவும் நல்கியிங்கு எவ்வகையானும்
இப் பெரும் தொழில் நாட்டுவம் வாரீர் !

(வெள்ளைத்)

○

निदि मिगुन्दवर् पॊर्कुवै तारीर् !
निदि कुऱैन्दवर् कासुगळ् तारीर् !
अदुवुम् अट्ऱवर् वाय्-च् चॊल् अरुळीर् !
आण्मैयाळर् उऴैप्पिनै नल्गीर् !
मदुर-त् तेमॊऴि मादर्गळ् ऍल्लाम्
वाणि पूसै-क् कुरियन पेसीर् !
ऍदुवुम् नल्गि इंगु ऍव्वगैयानुम्
इप्पॆरुम् तॊऴिल् नाट्टुवम् वारीर् !

(वॆळ्ळै)

○

धनी करें सोने का दान विपुल राशि में,
जो कम धनाढ्य हों वे बाँटें केवल सिक्के,
ग़रीब लोग मौखिक सहानुभूति दें,
और मज़बूत शरीर वाले करें श्रमदान,
मधुर भाषी स्त्रियाँ करें वंदना
विद्या की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती की ।
जो भी हमसे बन पड़े, करें हम
कुछ भी, कैसे भी,
और इस महत् कार्य के सदुद्देश्य
को पूरा कर दिखलाएँ ।
निष्कलंक श्वेत पद्म पर आसीन है देवी सरस्वती ।

13. நந்தலாலா

காக்கை சிறகினிலே நந்தலாலா! — நின்றன்
கரிய நிறம் தோன்றுதையே, நந்தலாலா ! 1

பார்க்கும் மரங்களெல்லாம் நந்தலாலா — நின்றன்
பச்சை நிறம் தோன்றுதையே, நந்தலாலா ! 2

கேட்கும் ஒலியிலெல்லாம் நந்தலாலா! — நின்றன்
கீதம் இசைக்குதடா, நந்தலாலா ! 3

தீக்குள் விரலை வைத்தால் நந்தலாலா ! — நின்னை
தீண்டும் இன்பம் தோன்றுதடா நந்தலாலா ! 4

○

13. नन्दलाला

काक्कै-च् चिऱगिऩिले नन्दलाला ! — निऩ्ऱन्
करिय निऱम् तोऩ्ऱुदैये, नन्दलाला ! 1

पार्क्कुम् मरंगळेल्लाम् नन्दलाला ! — निऩ्ऱन्
पच्चै निरम् तोऩ्ऱुदैये, नन्दलाला ! 2

केट्कुम् ऑलियिलैल्लाम् नन्दलाला ! — निऩ्ऱन्
गीतम् इसैक्कुदडा नन्दलाला ! 3

तीक्कुळ् विरलै वैत्ताल् नन्दलाला ! — निऩ्नै-त्
तीण्डुम् इऩ्बम् तोऩ्ऱुदडा नन्दलाला ! 4

○

13. नंदलाला

कौए के काले पंखों में
झलके श्यामल रंग तुम्हारा, ओ नंदलाला ! 1

जो भी पेड़ दिखे हरियाला
चमके बदन हरी द्युति वाला, ओ नंदलाला ! 2

कोई भी स्वर सुनूँ,
उसी में गूँजे गीत तुम्हारा प्यारा, ओ नंदलाला ! 3

जलती आग भले ही छू लूँ,
स्वर्गिक सुख पाऊँ तुमको छूने का, ओ नंदलाला ! 4

14. வேய்ங்குழல்

எங்கிருந்து வருகுவதோ? — ஒலி
யாவர் செய்குவதோ? — அடி தோழி!
(எங்கிருந்து)

குன்றினின்றும் வருகுவதோ ? — மரக்
கொம்பினின்றும் வருகுவதோ ? — வெளி
மன்றினின்றும் வருகுவதோ ? — என்றன்
மதி மருண்டிட செய்குதடி ! — இஃது 1
(எங்கிருந்து)

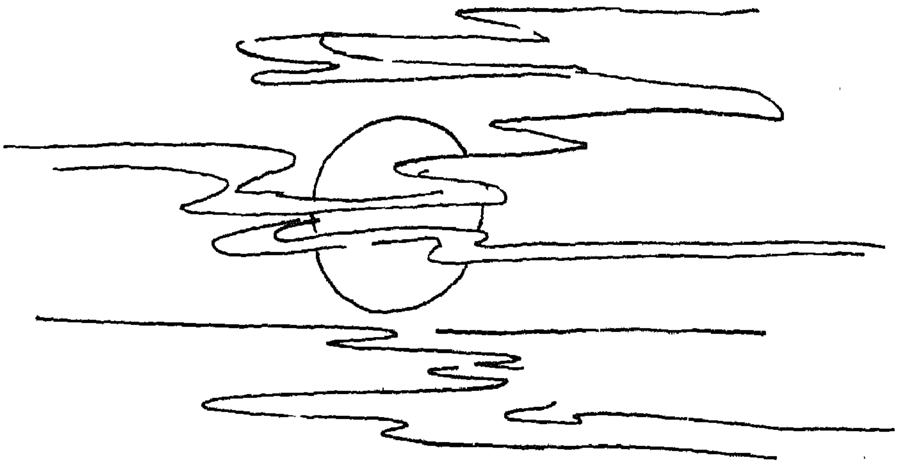
14. वेय्ङ्कुऴल्

ऍङ्गिरुन्दु वरुगुवदो ? — ऑलि
यावर् सॆय्गुवदो ? — अडि तोऴि !
(ऍङ्गिरुन्दु)

कुऩ्ऱिनिऩ्ऱुम् वरुगुवदो ? — मर-क्
कॊम्बिनिऩ्ऱुम् वरुगुवदो ? — वॆळि
मऩ्ऱिनिऩ्ऱुम् वरुगुवदो ? — ऍऩ्ऱऩ्
मदि मरुण्डिड सय्गुदडी ! — इहदु
(ऍङ्गिरुन्दु) 1

14. बाँसुरी कन्हैया की

कहाँ से आ रही यह रस माधुरी ?
सखि, कौन बजा रहा मधुभरी बाँसुरी ?
क्या दूर की पहाड़ियों से ?
या पेड़ों की डालियों से ?
या खुले मैदानों से ?
हाय ! मैं हुई बावरी, सुन यह धुन रसभीगी बँसुरिया की। 1
कहाँ से आ रही यह रस माधुरी ?
सखि, कौन बजा रहा मधुभरी बाँसुरी ?



காட்டினின்றும் வருகுவதோ ? — நிலாக்
காற்றை கொண்டு தருகுவதோ? — வெளி
நாட்டினின்றும் இத்தென்றல் கொணர்வதோ ?
நாதம் இஃதென் உயிரை உருக்குதே ! 3
(எங்கிருந்து)

கண்ணன் ஊதிடும் வேய்ங்குழல்தானடீ
காதிலே அமுது உள்ளத்தில் நஞ்சு,
பண் அன்றுமடி பாவையர் வாடப்
பாடி எய்திடும் அம்படி தோழி ! 5
(எங்கிருந்து)

○

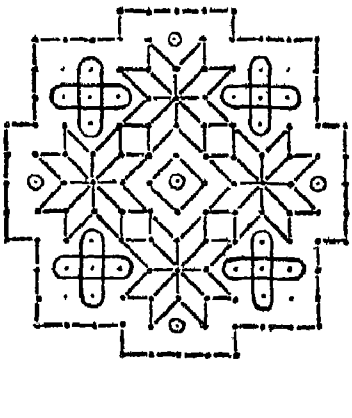
काट्टिनिऩ्ऱुम् वरुगुवदो ? — निला
काट्रै कॊण्डु तरुगुवदो ? — वॆळि
नाट्टिनिऩ्ऱुम् इत्तॆऩ्ऱल् कॊणर्वदो ?
नादम् इह्दॆऩ् उयिरै उरुक्कुदे !
(ऍङ्गिरुन्दु) 3

कण्णऩ् ऊदिडुम् वेय्ङ्कुऴल् ताऩडी !
कादिले अमुदु उळ्ळत्तिल् नञ्जु,
पण् अऩ्ऱामडि पावैयर् वाड-प्
पाडि ऍय्दिडुम् अम्बडि तोऴि !
(ऍङ्गिरुन्दु) 5

○

क्या यह वन के गहन मन से उपजी ?
या चाँदनी के पंख सँग उतरी ?
या नाप कर आई दूरियाँ परदेस की ?
हाय ! मैं मरी, सुन यह धुन रसभरी बँसुरिया की। 3
कहाँ से आ रही यह रस माधुरी ?
सखि, कौन बजा रहा मधुभरी बाँसुरी ?

मैं अब समझी, यह तो है कन्हैया की बंसरी।
यों तो घोले मेरे कानों में मिसरी
पर है वह विष की डली।
नहीं यहाँ कोई राग-ताल-गीत-संगीत
यह तो है बस एक तीर
करे जो आहत सलोनी तन्वंगी सुमुखियों को। 5
कहाँ से आ रही यह रस माधुरी ?
सखि, कौन बजा रहा मधुभरी बाँसुरी ?



15. கண்ணம்மா – என் காதலி - 1

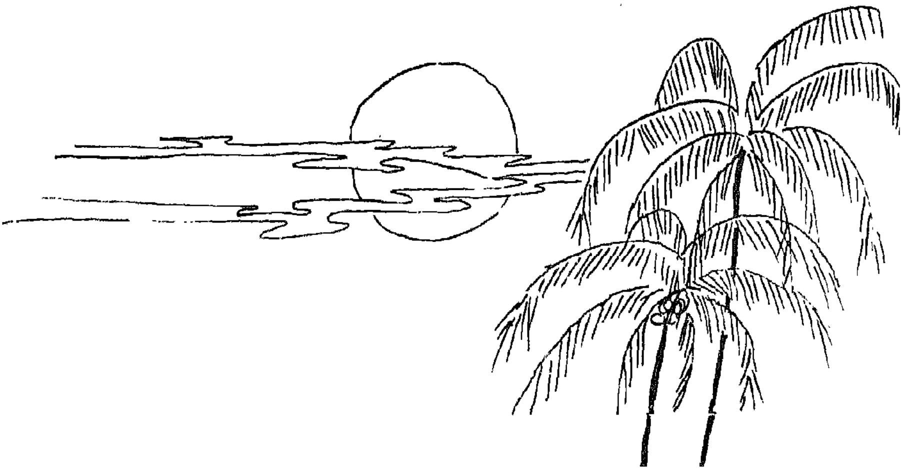
சுட்டும் விழிச் சுடர்தான்—கண்ணம்மா
    சூரிய சந்திரரோ ?
வட்டக் கரிய விழி!—கண்ணம்மா
    வானக் கருமை கொல்லோ ?
பட்டுக் கருநீலப்—புடவை
    பதித்த நல் வயிரம்
நட்ட நடு நிசியில் — தெரியும்
    நட்சத்திரங்களடீ! 1

15. कण्णम्मा - ऍऩ् कादलि — 1

चट्टुम् विऴि-च् चुडर् दाऩ् — कण्णम्मा !
    सूरिय चन्दिररो ?
वट्ट-क् करिय विऴि, — कण्णम्मा !
    वाऩ-क् करुमै कॊल्लो ?
पट्टु-क् करुनील-प् — पुडवै
    पदित्त नल् वयिरम्
नट्ट नडु निसियिल् — तॆरियुम्
    नक्षत्तिरंगळ् अडी ! 1

15. कन्नम्मा, मेरी प्रिया—1

कन्नम्मा, तुम्हारी उज्ज्वल आँखें
ही क्या चाँद और सूरज हैं ?
क्या तुम्हारी गोल काली आँखों से
ही ओतप्रोत है आकाश की कालिमा ?
तुम्हारी रत्न जटित
गहरी नीली रेशमी साड़ी
तारों भरी आधी रात
की आकाशगंगा ही तो नहीं है ? 1



சோலை மலரொளியோ — உனது
    சுந்தரப் புன்னகைதான்?
நீலக்கடல் அலையே — உனது
    நெஞ்சில் அலைகளடீ !
கோலக் குயிலோசை — உனது
    குரலின் இனிமையடீ !
வாலைக்குமரியடீ — கண்ணம்மா !
    மருவக் காதல் கொண்டேன். 2

सोलै मलरॊळियो ? — उऩदु
    सुन्दर-प् पुगहै दाऩ् ?
नील-क् कडल् अलैये — उऩदु
    नॆञ्जिल् अलैगळडी !
कोल-क् कुयिलोसै — उऩदु
    कुरलिऩ् इऩिमैयडी !
वालै-क् कुमरियडी, — कण्णम्मा !
    मरुव-क् कादल् कॊण्डेऩ् । 2

क्या तुम्हारी उजली मुस्कान ही
व्याप्त है बग़ीचे के फूलों में ?
क्या तुम्हारे दिल की धड़कनें ही
छाई हैं सागर की लहरों में ?
कोयल की मोहक कूक ने
ले ली है मधुरता तुम्हारे कंठ की ।
ओ नवयौवना, कुमारी कन्नम्मा,
मैं मर रहा हूँ तुम्हारे आलिंगन के लिए । 2

16. கண்ணம்மா என் காதலி – 2

ஆங்கப் பொழுதில் என் பின்புறத்திலே,
    ஆள்வந்து நின்றெனது கண்மறைக்கவே,
பாங்கினில் கையிரண்டும் தீண்டி அறிந்தேன்
    பட்டுடை வீசுகமழ் தன்னில் அறிந்தேன் ;
ஓங்கி வரும் உவகை ஊற்றில் அறிந்தேன் ;
    ஓட்டும் இரண்டுளத்தின் தட்டில் அறிந்தேன்;
"வாங்கி விடடி கையை ஏடி கண்ணம்மா!
    மாயம் எவரிடத்தில்?" என்று மொழிந்தே. 2

16. कण्णम्मा - ऍऩ् कादलि — 2

आंग-प् पॉऴुदिल् ऍऩ् पिऩ्पुऱत्तिले ,
    आळ् वन्दु निऩ्ऱॆऩदु कण् मऱैक्कवे ,
पांगिऩिल् कैयिरण्डुम् तीण्डि अऱिन्देऩ् ।
    पट्टुडै वीसुकमऴ् तऩ्ऩिल् अऱिन्देऩ् ;
ओंगि वरुम् उवगै ऊट्रिलऱिन्देन् ;
    ऒॅट्टुम् इरण्डुळत्तिऩ् तट्टिलऱिन्देऩ् ;
"वांगि विडडि कैयै एडि कण्णम्मा ,
    मायम् ऍवरिडत्तिल् ?" ऍऩ्ऱु मॉऴिन्दे । 2

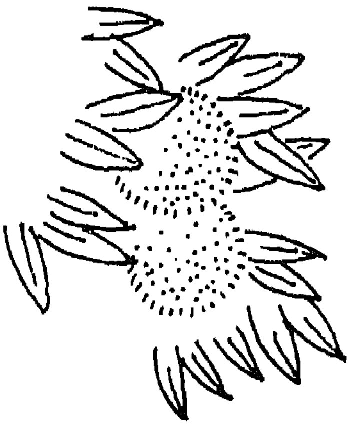
16. कन्नम्मा, मेरी प्रिया—2

अचानक एक जोड़ी हथेलियों ने
मूंद लीं मेरी आँखें पीछे से।
जानी पहचानी हथेलियों को मैंने छूते ही जान लिया,
रेशमी परिधान की सुवास को मैंने सूँघते ही जान लिया।
मैंने उसे पहचाना अंतरतम के आनंद से,
मैंने उसे पहचाना स्वर मेल में धड़कते दो दिलों की
आवाज़ से।
कहा मैंने, "अरी कन्नम्मा, हटा ले अपनी हथेलियाँ,
नहीं चलने का यह मोहिनी जादू यहाँ।" 2

சிரித்த ஒலியில் அவள் கைவிலக்கியே,
திருமித் தழுவி "என்ன செய்தி சொல்" என்றேன்;
"நெரித்த திரைக்கடலில் என்ன கண்டிட்டாய்?
நீல விசும்பினிடை என்ன கண்டிட்டாய்?
திரித்த நுரையினிடை என்ன கண்டிட்டாய்?
சின்னக் குமிழிகளில் என்ன கண்டிட்டாய்?
பிரித்து பிரித்து நிதம் மேகம் அளந்தே,
பெற்ற நலங்கள் என்ன? பேசுதி" என்றாள். 3

सिरित्त ऑॅलियिल् अवळ् कैविलक्किये
तिरुमि-त् तऴुवि "ऍऩ्ऩ सॆय्दि सॊल्" ऍऩ्ऱेऩ् ;
"नॆरित्त तिरै-क् कडलिल् ऍऩ्ऩ कण्डिट्टाय् ?
नील विसुम्बिऩिडै ऍऩ्ऩ कण्डिट्टाय् ?
तिरित्त नुरैयिऩ् इडै ऍऩ्ऩ कण्डिट्टाय् ?
चिऩ्ऩ-क् कुमिऴिगळिल् ऍऩ्ऩ कण्डिट्टाय् ?
पिरित्तु-प् पिरित्तु निदम् मेगम् अळन्दे
पेट्र नलंगळ् ऍऩ्ऩ ? पेसुदि" ऍऩ्ऱाळ् । 3

ज्यूँही वह हँसी,
मैंने खिसका दीं परे को उसकी हथेलियाँ, और
घूम कर बाँध लिया उसे अपने आग़ोश में
और पूछा, "यह माजरा क्या है ?"
कहा उसने—
"टकराती लहरों में तुमने क्या देखा ?
"नीले आकाश में तुमने क्या देखा ?
"उफनाती लहरों के फेनों में तुमने क्या देखा ?
"छोटे-छोटे बुलबुलों में तुमने क्या देखा ?
"पल पल परिवर्तित मेघों के रूपों को हर दिन
अवलोकित कर तुमने क्या सीखा ?" 3



"நெரித்த திரை கடலில் நின் முகம் கண்டேன்;
    நீல விசும்பினிடை நின்முகம் கண்டேன் ;
திரித்த நுரையினிடை நின் முகம் கண்டேன் ;
    சின்னக் குமிழிகளில் நின்முகம் கண்டேன் ;
பிரித்து பிரித்து நிதம் மேகம் அளந்தே,
    பெற்றதுன் முகமன்றி பிறிதொன்றில்லை;
சிரித்த ஒலியினில் உன் கை விலக்கியே,
    திருமித் தழுவியதில் நின் முகம் கண்டேன்." 4

नैँरित्त तिरै-क् कडलिल् निऩ् मुगम् कण्डेऩ् ;
    नील विसुम्बिऩिडै निऩ् मुगम् कण्डेऩ् ;
तिरित्त नुरैयिऩिडै निऩ् मुगम् कण्डेऩ् ;
    चिऩ्ऩ-क् कुमिऴिगळिल् निऩ् मुगम् कन्डेऩ् ;
पिरित्तु-प् पिरित्तु निदम् मेगम् अळन्दे
    पेट्रैदुऩ् मुगमऩ्ऱि-प् पिऱिदॉऩ्ऱिल्लै ;
सिरित्त ऑलियिऩिल् उऩ् कैविलक्किये ,
    तिरुमि-त् तऴुवियदिल् निऩ् मुगम् कण्डेऩ् ।" 4

"टकराती लहरों में मैंने देखा तुम्हारा चेहरा,
नीले आकाश में मैंने देखा तुम्हारा चेहरा,
उफनाती लहरों के फेन में मैंने देखा तुम्हारा चेहरा,
छोटे-छोटे बुलबुलों में मैंने देखा तुम्हारा चेहरा,
जिन मेघों को रोज़ मैंने निहारा, उनमें देखा
बस तुम्हारा चेहरा, और कुछ भी नहीं।
जब मैंने घूम कर तुम्हें बाँधा अपनी बाँहों के घेरे में
और तुम हँसी, तो तब भी मुझे दिखा
बस तुम्हारा चेहरा और कुछ भी नहीं।" 4

17. கண்ணன் – என் காதலன்

தூண்டில் புழுவினைப்போல் — வெளியே
 சுடர் விளக்கினைப்போல்,
நீண்ட பொழுதாக — எனது
 நெஞ்சம் துடித்ததடீ !
கூண்டுக் கிளியினைப் போல் — தனிமை
 கொண்டு மிகவும் நொந்தேன் ;
வேண்டும் பொருளை எல்லாம் — மனது
 வெறுத்து விட்டதடீ ! 1

17. कण्णऩ् - एऩ् कादलऩ्

तूण्डिल् पुऴुविऩै-प् पोल् — वेळियॆ
 सुडर् विळक्किऩै - प् पोल् ,
नीण्ड पॊऴुदाग — ऍऩदु
 नॆञ्जम् तुडित्तदडी !
कूण्डु-क् किळियिऩै-प् पोल् — तऩिमै
 कॊण्डु मिगवुम् नॊन्देऩ् ;
वेण्डुम् पॊरुळै ऍल्लाम् — मऩदु
 वॆऱुत्तु विट्टदडी ! 1

17. मेरा प्रेमी कान्हा

बंसी की कँटिया में फँसाए गए चारे की तरह
खुले में छोड़े गए दीपक की काँपती बाती की तरह
मेरा दिल धड़कता है
ज्यूँ ज्यूँ समय बीतता है।
पिंजरे के सुग्गे की तरह
मैं अकेलेपन को झेलती हूँ।
कभी जिन्हें चाहा, उन चीज़ों को
आज मैं नफ़रत करती हूँ। *1*



உணவு செல்லவில்லை — சகியே !
    உறக்கம் கொள்ளவில்லை,
மணம் விரும்பவில்லை — சகியே !
    மலர் பிடிக்கவில்லை.
குணம் உறுதியில்லை — எதிலும்
    குழப்பம் வந்ததடீ !
கணமும் உள்ளத்திலே — சுகமே
    காணக் கிடைத்ததில்லை . 3

उणवु सॆल्लविल्लै -- सकिये !
    उऱक्कम् कॊळ्ळविल्लै ,
मणम् विरुम्बविल्लै — सकिये,
    मलर् पिडिक्कविल्लै ।
गुणम् उऱुदियिल्लै ; — ऎदिलुम्
    कुऴप्पम् वन्ददडी !
कणमुम् उळ्ळत्तिले — सुगमे
    काण-क् किडैत्तदिल्लै । 3

ओ री सखी !
न मुझे खाना-पीना सुहाए
न नींद मेरी पलकों में आए।
न कोई फूल मुझको भाए।
मैं हूँ अशांत अस्थिर ।
मैं हूँ भ्रमाविष्ट ।
एक पल के भी लिए
मेरे चित्त को नहीं मिले शांति । *3*

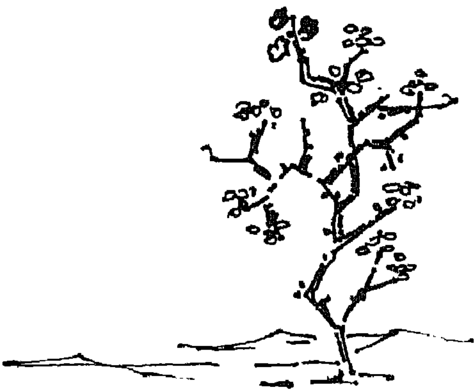


கனவு கண்டதிலே — ஒரு நாள்
    கண்ணுக்குத் தோன்றாமல்,
இனம் விளங்கவில்லை — எவனோ
    என்னகம் தொட்டு விட்டான்.
வினவக் கண் விழித்தேன் — சகியே !
    மேனி மறைந்து விட்டான் ;
மனதில் மட்டிலுமே — புதிதோர்
    மகிழ்ச்சி கண்டதடீ ! 5

कनवु कण्डदिलै — ऑरु नाळ्
    कण्णुक्कु-त् तोऩ्ऱामल् ,
इनम् विळंगविल्लै, — ऍवऩो
    ऍऩ्ऩगम् तॉट्टुविट्टाऩ् ।
विऩव-क् कण् विऴित्तेऩ् — सकिये !
    मेऩि मऱैन्दुविट्टाऩ् ;
मऩदिल् मट्टिलुमे — पुदिदोर्
    मगिऴ्चि कण्डदडी ! 5

91

सपने में एक बार
अनदेखा कोई मेरे दिल में आ समाया।
मैं नहीं जानती थी कौन है वह !
मैं जानना चाहती थी कौन है वह
कि मेरी आँख खुल गई।
किंतु सखी, वह तो विलीन हो गया !
और मेरे दिल में खुशियों का एक
नया रोमांच भर गया ! 5



உச்சி குளிர்ந்ததடீ ! — சகியே !
 உடம்பு நேராச்சு.
மச்சிலும் வீடுமெல்லாம் — முன்னைப்போல்
 மணத்துக் கொத்ததடீ !
இச்சை பிறந்ததடீ ! — எதிலும்
 இன்பம் விளைந்ததடீ
அச்சம் ஒழிந்ததடீ — சகியே !
 அழகு வந்ததடீ ! 6

○

उच्चि कुळिर्न्ददडी ! — सकिये !
 उडम्बु नेराच्चु ।
मच्चिलुम् वीडुमॆल्लाम् — मुऩ्ऩै-प्-पोल्
 मऩत्तु-क् कॊत्तदडी !
इच्चै पिऱन्ददडी ! — ऍदिलुम्
 इऩ्बम् विळैन्ददडी !
अच्चम् ऒऴिन्ददडी ! — सकिये !
 अऴगु वन्ददडी ! 6

○

मेरा चित्त हो गया शांत।
सखी, मैंने महसूस की ताज़गी।
अपने घर के हर कोने में
हर चीज़ को मैंने प्यार किया।
इच्छाओं ने मुझमें फिर से बसेरा लिया।
और हर चीज़ में अनुभव किया मैंने आमोद।
अब मुझे किसी बात का डर नहीं रहा।
हर कहीं हर चीज़ में अब थी सुन्दरता। 6

18. காணி நிலம்

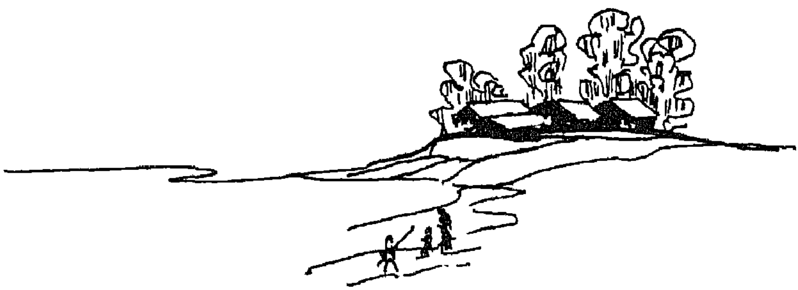
காணி நிலம் வேண்டும், — பராசக்தி
　　காணி நிலம் வேண்டும் ; — அங்கு
தூணில் அழகியதாய் — நன்மாடங்கள்
　　துய்ய நிறத்தினதாய் — அந்தக்
காணி நிலத்திடையே — ஓர் மாளிகை
　　கட்டித் தர வேண்டும் ; — அங்குக்
கேணி அருகினிலே — தென்னைமரக்
　　கீற்றும் இளநீரும். 1

18. काणि निलम्

काणि निलम् वेण्डुम्, — पराशक्ति !
　　काणि निलम् वेण्डुम्; — अंगु-त्
तूणिल् अऴगियदाय् — नऩ्माडंगळ्
　　तुय्य निऱत्तिऩदाय् — अन्द-क्
काणि निलत्तिडैये — ओर् माळिगै
　　कट्टिन्त् तरवेण्डुम् ; — अंगु-क्
केणि अरुगिऩिले — तॆंऩ्ऩै मर-क्
　　कीट्रुम् इळनीरुम्। 1

18. एक बीघा ज़मीन

ओ परा शक्ति ! मुझे थोड़ी सी ज़मीन ज़रूर देना ।
उस पर बेदाग़ सफ़ेदी वाला एक महल बनवा देना ।
जो खूबसूरत खम्भों पर अपनी मंज़िलें टिकाए हो ।
नज़दीक ही एक कुआँ भी हो, जिसके पास
नारियल के पेड़ों का एक कुंज हो, जिसमें नरम नरम
नारियल और सुकोमल पत्ते हों । 1



பத்துப் பன்னிரண்டு — தென்னைமரம்
பக்கத்திலே வேணும் ;—நல்ல
முத்துச் சுடர்போலே — நிலாவொளி
முன்பு வரவேணும் ; — அங்கு,
கத்தும் குயிலோசை — சற்றே வந்து
காதில் பட வேணும் — என்றன்
சித்தம் மகிழ்ந்திடவே — நன்றாயிளம்
தென்றல் வரவேணும், 2

पत्तु-प् पऩ्ऩिरन्डु — तॆऩ्ऩैमरम्
पक्कत्तिले वेणुम्; — नल्ल
मुत्तु-च् चुडर् पोले — निलावॊॆळि
मुऩ्बु वरवेणुम् ; — अंगु-क्
कत्तुम् कुयिलोसै — सट्रे वन्दु
कादिल् पडवेणुम् ; — ऍऩ्ऱऩ्
चित्तम् मगिऴ्न्दिडवे — नऩ्ऱायिळम्
तॆऩ्ऱल् वरवेणुम् । 2

महल के चारों ओर कम से कम दस-बारह नारियल
के पेड़ ज़रूर हों।
चाँदनी की मोतिया आब से घर के सामने
का ओसारा दमक उठे
और कोयल की मधुर कुहू कुहू से मेरे कान गूँज उठें।
और मलय समीर बह बह कर
मेरे दिल को उमंगों से भर भर जाया करे। 2



பாட்டுக் கலந்திடவே — அங்கே ஒரு
 பத்தினிப் பெண் வேணும் — எங்கள்
கூட்டுக் களியினிலே கவிதைகள்
 கொண்டு தரவேணும் — அந்தக்
காட்டு வெளியினிலே — அம்மா! நின்றன்
 காவலுற வேணும் —என்றன்
பாட்டுத் திறத்தாலே — இவ்வையத்தை
 பாலித்திடவேணும். 3

○

पाट्टु-क् कलन्दिडवे — अंगे ऑरु
 पत्तिनि-प् पैंण् वेणुम्; — ऍङ्गळ्
कूट्टु-क् कळियिनिले — कविदैगळ्
 कॉण्डु तरवेणुम् — अन्द-क्
काट्टु वैंळियिनिले — अम्मा! निन्रन्
 कावलुर वेणुम् — ऍन्रन्
पाट्टु-त् तिरत्ताले — इव्वैयत्तै-प्
 पालित्तिड वेणुम्। 3

○

मेरी एक साध्वी स्त्री हो जो मेरे सुर में
सुर मिला कर गाया करे।
हम दोनों के पारस्परिक आनंद से
कविताओं का झरना फूट पड़े।
माँ, उस एकांत आश्रम में मेरी रक्षा करना
ताकि मेरी कविताएँ विश्व को मुक्त कर सकें। 3

19. சொல்லடி சிவசக்தி

நல்லதோர் வீணை செய்தே — அதை
　　நலங்கெட புழுதியில் எறிவதுண்டோ?
சொல்லடி சிவசக்தி ! — எனைச்
　　சுடர்மிகும் அறிவுடன் படைத்துவிட்டாய்,
வல்லமை தாராயோ — இந்த
　　மாநிலம் பயனுற வாழ்வதற்கே?
சொல்லடி, சிவ சக்தி ! — நிலச்
　　சுமையென வாழ்ந்திட புரிகுவையோ ? 1

○

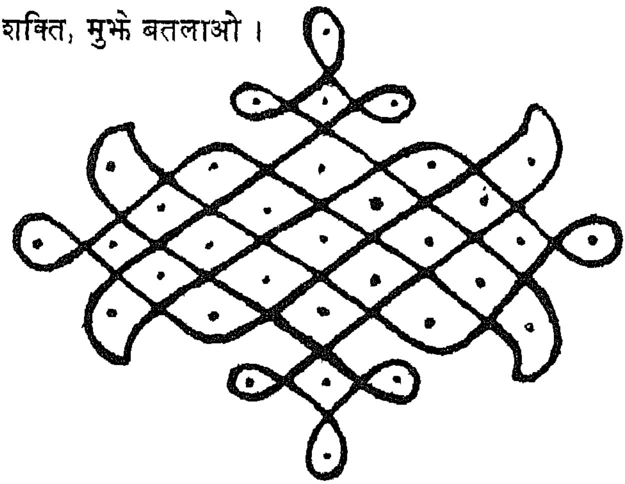
19. सॊल्लडि शिवशक्ति

नल्लदोर् वीणै सैय्दे — अदै
　　नलङ्गॆड-प् पुऴुदियिल् ऍऱिवदुण्डो ?
सॊल्लडि शिवशक्ति ! — ऍऩै-च्
　　चुडर् मिगुम् अऱिवुडऩ् पडैत्तुविट्टाय्
वल्लमै तारायो — इन्द
　　मानिलम् पयऩुऱ वाऴ्वदर्कॆ ?
सॊल्लडि, शिवशक्ति ! — निल-च्
　　चुमैयॆऩ वाऴ्न्दिड-प् पुरिगुवैयो ? 1

○

19. ओ शिव शक्ति, मुझे बतलाओ

बना एक उत्तम सी वीणा, क्या फेंकेगा
कोई उसको कूड़े के अम्बार पर ?
ओ शिव शक्ति, मुझे बतलाओ ।
तुमने मुझको रचा, दिया मुझको
प्रांजल मेधा का असीम भंडार,
क्या तुम मुझको शक्ति न दोगी
जिससे करूँ विश्व - कल्याण ?
ओ शिव शक्ति, मुझे बतलाओ ।
मुझको दोगी शाप, कि जिससे
बना रहूँ मैं बोझ विश्व पर ?
ओ शिव शक्ति, मुझे बतलाओ । 1



20. அல்லா

அல்லா, அல்லா, அல்லா!

பல்லாயிரம் பல்லாயிரம் கோடி கோடி அண்டங்கள்
எல்லாத் திசையிலும் ஓர் எல்லையில்லா வெளிவானிலே
நில்லாது சுழன்றோட நியமம் செய்தருள் நாயகன்
சொல்லாலும் மனத்தாலும் தொடரொணாத பெருஞ்சோதி!
(அல்லா, அல்லா, அல்லா!)

1

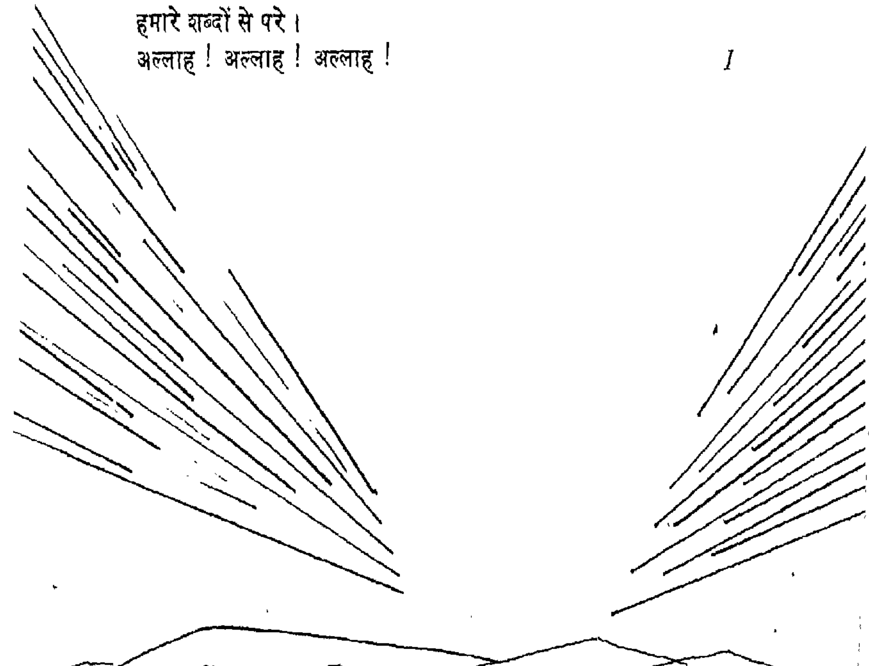
20. अल्लाह्

अल्लाह्, अल्लाह्, अल्लाह् !

पल्लायिरम् पल्लायिरम् कोडि कोडि अण्डंगळ्
ऍल्लात् तिसैयिलुम् ओर् ऍल्लैयिल्ला वॆंळिवानिले
निल्लादु सुऴन्रोड नियमम् सैय्दरुळ् नायकन्
सॊल्लालुम् मनत्तालुम् तॊडरॊणाद पॆरुंजोति !
(अल्लाह्, अल्लाह्, अल्लाह् !) 1

20. अल्लाह

अल्लाह ! अल्लाह ! अल्लाह !
वही है वह परम शक्ति
जो अनंत आकाश और अंतरिक्ष
की लाखों-करोड़ों आकाशगंगाओं को
अविराम गति में चलाती है ।
वह है ब्रह्मांड की परम ज्योति !
हमारी विचार शक्ति से परे
हमारे शब्दों से परे ।
अल्लाह ! अल्लाह ! अल्लाह ! I



கல்லாதவராயினும் உண்மை சொல்லாதவராயினும்
பொல்லாதவராயினும் தவம் இல்லாதவராயினும்
நல்லாருரை நீதியின் படி நில்லாதவராயினும்
எல்லாரும் வந்தேத்தும் அளவில் யமபயம் கெடச்
செய்பவன்.

(அல்லா, அல்லா, அல்லா!)

2

○

कल्लादवरायिन्नुम् उण्मै सॊल्लादवरायिन्नुम्
पॊल्लादवरायिन्नुम् तवम् इल्लादवरायिन्नुम्
नल्लारुरै नीतियिऩ्पडि निल्लादवरायिन्नुम्
ऎल्लारुम् वन्देत्तुम् अळविल् यमभयं कॆड सॆय्बवऩ्।
(अल्लाह, अल्लाह, अल्लाह!) 2

○

पुरुष और स्त्रियाँ—
जो शिक्षित तक नहीं हैं
जो सत्य को निज व्यवहार में भी नहीं ला सकते
जो दुष्ट और पापी तक हैं
जो अपने हिस्से की तपश्चर्या तक नहीं कर सकते
जो सयानों के उपदेशों तक की उपेक्षा करते हैं—
वे सभी उसके गुण गाते हैं
और उसकी वंदना करते हैं ।
वह उनके मृत्यु भय को विनष्ट करता है ।
अल्लाह ! अल्लाह ! अल्लाह ! 2

21. யேசு கிறிஸ்து

"ஈசன் வந்து சிலுவையில் மாண்டான்,
எழுந்து உயிர்த்தனன் நாள் ஒரு மூன்றில் ;"
நேசமா மரியா மக்தலேநா
நேரிலே இந்தச் செய்தியை கண்டாள்.
தேசத்தீர்! இதன் உட்பொருள் கேளீர் ;
தேவர் வந்து நமக்குள் புகுந்தே
நாசமின்றி நமை நித்தம் காப்பார்,
நம் அகந்தையை நாம் கொன்றுவிட்டால். 1

21. येसु किरिस्तु

"ईसऩ् वन्दु सिलुवैयिल् माण्डाऩ्,
ऍऴुन्दु उयिर्त्तऩऩ् नाळ् ऑरु मूऩ्ऱिल् ;"
नेस मा मरिया, मग्दलेना
नेरिले इन्द सॆय्दियै-क् कण्डाळ्।
देसत्तीर्! इदऩ् उट्पॊरुळ् केळीर् ;
देवर् वन्दु नमक्कुळ् पुगुन्दे
नासमिऩ्ऱि नमै नित्तम् काप्पार्,
नम् अगन्दैयै नाम् कॊऩ्ऱुविट्टाल्। 1

21. ईसा मसीह

वह सलीब पर मरा।
फिर जीवित हो उठा तीन दिनों बाद।
करुणामयी मारिया मैगदालिनः साक्षी है इस बात की।
मेरे देशवासियो ! सुनो, इस घटना में निहित अर्थ को;
परमात्मा आएगा हमारे दिलों में और
बचाएगा हमें सभी अनिष्टों से प्रति दिन,
अगर हम विनष्ट कर दें
अपनी अहम्मन्यता और हेकड़ी को।

22. பாரத சமுதாயம்

பாரத சமுதாயம் வாழ்கவே! - வாழ்க வாழ்க!
பாரத சமுதாயம் வாழ்கவே! ஜய ஜய ஜய!

(பாரத)

முப்பது கோடி ஜனங்களின் சங்கம்
முழுமைக்கும் பொது உடைமை
ஒப்பிலாத சமுதாயம்
உலகத்துக்கொரு புதுமை - வாழ்க !

(பாரத)

22. भारत समुदायम्

भारत समुदायम् वाऴ्गवे ! — वाऴ्ग वाऴ्ग !
भारत समुदायम् वाऴ्गवे ! — जय जय जय !

(भारत)

मुप्पदु कोडि जनंगळिन् संगम्
मुऴुमैक्कुम् पॊदु उडैमै
ऒप्पिलाद समुदायम्
उलगत्तुक्कॊरु पुदुमै — वाऴ्ग !

(भारत)

22. भारत की जनता

जय हो, भारत की जनता की जय हो, जय हो !
भारत की जनता की जय हो, जय हो, जय हो !!
तीस कोटि जनता का संघ यह
सम्पत्ति पर होगा सबका ही समान अधिकार
निरुपम जन समुदाय यह
विश्व में इसकी समता कहाँ ?
जय हो, भारत की जनता की जय हो, जय हो !
भारत की जनता की जय हो, जय हो, जय हो !!



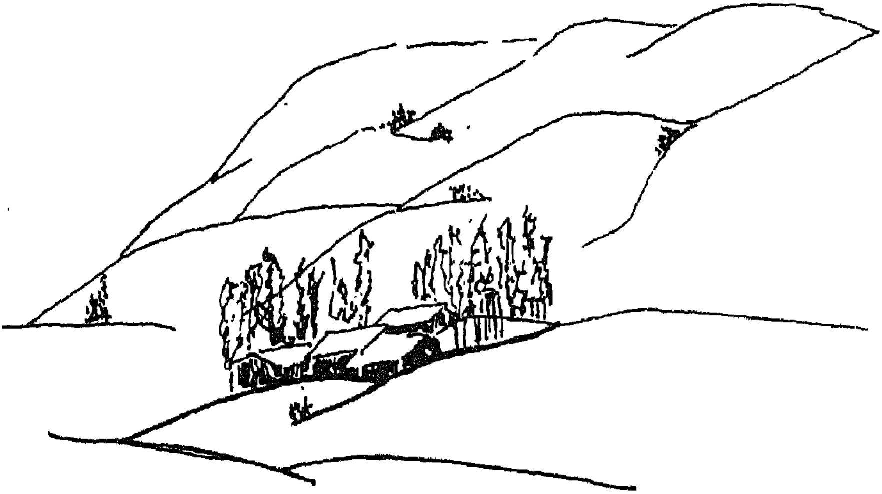
மனிதர் உணவை மனிதர் பறிக்கும்
வழக்கம் இனியுண்டோ?
மனிதர் நோக மனிதர் பார்க்கும்
வாழ்க்கை இனியுண்டோ? - புலனில்
வாழ்க்கை இனியுண்டோ? - நம்மிலந்த
வாழ்க்கை இனியுண்டோ? - வாழ்க!

(பாரத)

मऩिदर् उणवै मऩिदर् परिक्कुम्
वऴक्कम् इऩियुण्डो ?
मनिदर् नोग मनिदर् पार्क्कुम्
वाऴ्क्कै इनियुण्डो ? — पुलऩिल्
वाऴ्क्कै इऩियुण्डो ? — नम्मिलन्द
वाऴ्क्कै इऩियुण्डो ? — वाऴ्ग !

(भारत)

एक की रोटी दूसरा छीने
ऐसी बात अब कहाँ ?
दुखी एक रोए और दूसरा चुपचाप देखे
क्या यह सम्भव है अब इस देश में ?
जय हो, भारत की जनता की जय हो, जय हो !
भारत की जनता की जय हो, जय हो, जय हो !!



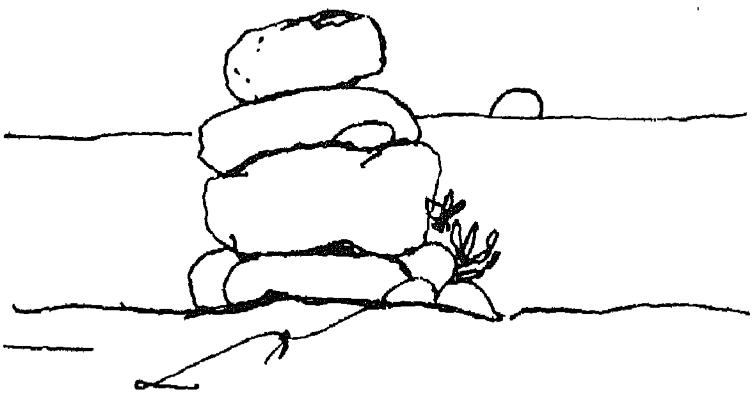
இனிய பொழில்கள் நெடிய வயல்கள்
எண்ணரும் பெரு நாடு ;
கனியும் கிழங்கும் தானியங்களும்
கணக்கின்றித்தரு நாடு — இது
கணக்கின்றித்தரு நாடு — நித்த நித்தம்
கணக்கின்றித்தரு நாடு—வாழ்க! 1

(பாரத)

इनिय पॆॊऴिल्गळ् नॆडिय वयल्गळ्
ऍण्णरुम् पॆरुनाडु ;
कऩियुम् किऴङ्गुम् दाऩियंगळुम्
कणक्किऩ्ऱि-त् तरु नाडु — इदु
कणक्किऩ्ऱि-त् तरु नाडु — नित्तनित्तम्
कणक्किऩ्ऱि-त् तरु नाडु — वाऴ्ग !

(भारत) 1

सबसे सुन्दर देश हमारा; अपनी धरती सबसे प्यारी
सुन्दर अपने बाग़ बग़ीचे, शस्य श्यामला भूमि हमारी
कन्द मूल फल धान्य निरंतर
देता रहता देश हमें यह।
जय हो, भारत की जनता की जय हो, जय हो !
भारत की जनता की जय हो, जय हो, जय हो !! 1

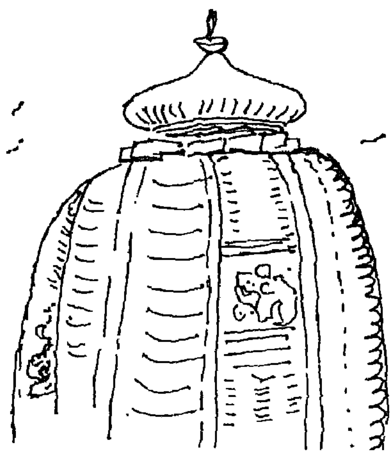


இனியொரு விதி செய்வோம் — அதை
    எந்த நாளும் காப்போம் ;
தனியொருவனுக்கு உணவில்லையெனில்
    ஜகத்தினை அழித்திடுவோம் — வாழ்க! 2
(பாரத)

इऩियॊरु विदि सॆय्वोम् — अदै
    ऎन्द नाळुम् काप्पोम्;
तऩियॊरुवऩुक्कु उणविलै ऎऩिल्
    जगत्तिऩै अऴित्तिडुवोम् — वाऴ्ग !

(भारत) 2

एक नया कानून बनाएँ
पालन उसका सदा करें हम—
भूखा रहे एक भी जन यदि
नष्ट भ्रष्ट कर दें जग को हम।
जय हो, भारत की जनता की जय हो, जय हो !
भारत की जनता की जय हो, जय हो, जय हो !! 2



எல்லாரும் ஓர் குலம் எல்லாரும் ஓரினம்
எல்லாரும் இந்தியா மக்கள்,
எல்லாரும் ஓர் நிறை எல்லாரும் ஓர் விலை
    எல்லாரும் இந்நாட்டு மன்னர் — நாம்
    எல்லாரும் இந்நாட்டு மன்னர் — ஆம்
    எல்லாரும் இந்நாட்டு மன்னர் — வாழ்க! 4

(பாரத)

○

ऍल्लारुम् ओर् कुलम् ऍल्लारुम् ओरिऩम्
ऍल्लारुम् इन्दिया मक्कळ्,
ऍल्लारुम् ओर् निऱै ऍल्लारुम् ओर् विलै
    ऍल्लारुम् इन्नाट्टु मऩ्ऩर् — नाम्
    ऍल्लारुम् इन्नाट्टु मऩ्ऩर् — आम्
    ऍल्लारुम् इन्नाट्टु मऩ्ऩर् — वाऴ्ग !

(भारत) 4

○

हम सबका परिवार एक है
हम सबका घर बार एक है ।
हम सब हैं भारतवासी ।
हम इस देश के शासक हैं ।
हम इस देश के शासक हैं ।
हम इस देश के शासक हैं ।
जय हो, भारत की जनता की जय हो, जय हो !
भारत की जनता की जय हो, जय हो, जय हो !! 4

23. பாப்பா பாட்டு

ஓடி விளையாடு பாப்பா!— நீ
ஓய்ந்திருக்கலாகாது பாப்பா!
கூடி விளையாடு பாப்பா! — ஒரு
குழந்தையை வையாதே பாப்பா! 1

சின்னஞ் சிறு குருவி போலே — நீ
திரிந்து பறந்து வா பாப்பா!
வன்ன பறவைகளைக் கண்டு — நீ
மனதில் மகிழ்ச்சி கொள்ளு பாப்பா! 2

23. पाप्पा-प् पाट्टु

ओडि विळैयाडु पाप्पा ! — नी
ओय्न्दिरुक्कल् आगादु पाप्पा !
कूडि विळैयाडु पाप्पा ! — ऑरु
कुऴन्दैयै वैयादे पाप्पा ! 1

चिऩ्नजंचिऱु कुरुवि पोले — नी
तिरिन्दु पऱन्दु वा पाप्पा !
वऩ्न पऱवैगळै कण्डु — नी
मऩदिल् मगिऴ्चि कॉळ्ळु पाप्पा ! 2

23. शिशु-गीत

उछलो कूदो, खेलो भागो, मेरे बच्चे।
कभी समय न गँवाना।
सबसे हिलमिल कर खेलना
और कभी किसी बच्चे को बुरा भला न कहना। 1

गौरैया की तरह उड़ो और भागो
रंगबिरंगी चिड़ियों को देख,
खिलखिलाकर खुशी से किलको। 2



பாலைப் பொழிந்து தரும் பாப்பா ! — அந்த
பசு மிக நல்லதடி பாப்பா !
வாலைக் குழைத்து வரும் நாய்தான் — அது
மனிதர்க்கு தோழனடி பாப்பா ! 4

காலை எழுந்தவுடன் படிப்பு — பின்பு
கனிவு கொடுக்கும் நல்ல பாட்டு!
மாலை முழுதும் விளையாட்டு — என்று
வழக்கப் படுத்திக் கொள்ளு பாப்பா! 6

पालै पॊऴिन्दु तरुम् पाप्पा ! — अन्द-प्
पसु मिग नल्लदडि पाप्पा !
वालै कुऴैत्तु वरुम् नाय् दाऩ् — अदु
मऩिदर्क्कु तोऴऩडि पाप्पा ! 4

कालै ऎऴुन्दवुडऩ् पडिप्पु — पिऩ्बु
कऩिवु कॊडुक्कुम् नल्ल पाट्टु !
मालै मुऴुदुम् विळैयाट्टु — ऎऩ्ऱु
वऴक्क-प् पडुत्तिक्कॊळ्ळु पाप्पा ! 6

जो गाय तुम्हें दूध देती है,
वह बहुत अच्छी है ।
दुम हिलाने वाला कुत्ता
मनुष्यों का बड़ा अच्छा दोस्त है । 4

सबेरे उठ कर सबसे पहले
तुम पढ़ाई किया करो ।
फिर ऐसे गीत गाओ
जिन्हें गाते हुए तुम खुशी से भर जाते हो ।
शाम के समय खूब खेलो ।
मेरे बच्चे, रोज़ तुम ऐसे ही करो । 6



பாதகம் செய்பவரைக் கண்டால் — நாம்
    பயம் கொள்ளல் ஆகாது பாப்பா!
மோதி மிதித்து விடு பாப்பா — அவர்
    முகத்தில் உமிழ்ந்து விடு பாப்பா! 8

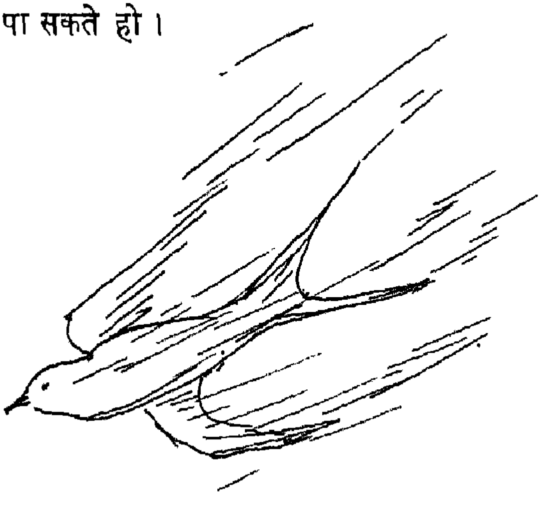
சோம்பல் மிகக் கெடுதி பாப்பா! — தாய்
    சொன்ன சொல்லை தட்டாதே பாப்பா!
தேம்பி அழும் குழந்தை நொண்டி — நீ
    திடம் கொண்டு போராடு பாப்பா! 10

पादगम् सॅयवरै-क् कण्डाल् — नाम्
    भयंकॉळ्ळलागादु पाप्पा !
मोदि मिदित्तुविडु पाप्पा — अवर्
    मुगत्तिल् उमिऴ्न्दुविडु पाप्पा ! 8

सोम्बल् मिगक्केडुदि पाप्पा ! — ताय्
    सॆॉन्ऩ सॆॉल्लै तट्टादे पाप्पा !
तेम्बि अऴुम् कुऴन्दै नॆॉण्डि, — नी
    तिडम् कॆॉण्डु पोराडु पाप्पा ! 10

बुरे आदमियों से कभी मत डरना ।
ग़लत काम करने वालों के मुँह पर थूक देना ।
कितनी भी विपत्तियाँ आएँ
तुम उनसे कभी न डरना । 8

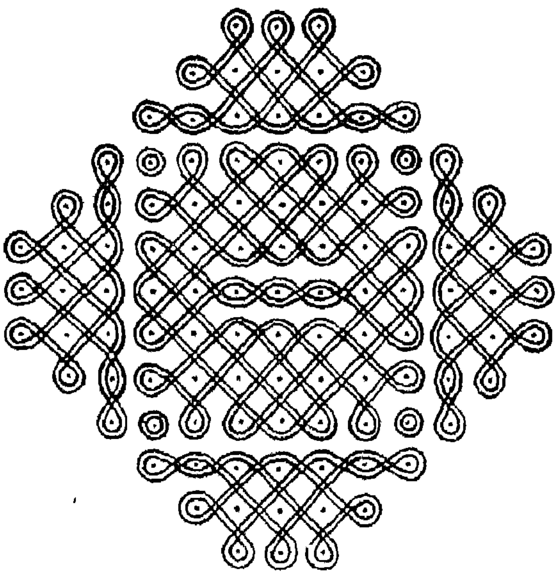
आलस बड़ी बुरी चीज़ है, बच्चे !
अपनी माँ का कहना मानो
और याद रखो रोने वाला बच्चा
कभी आगे नहीं बढ़ सकता ।
साहस से काम लो तो तुम हर
संकट से लड़ सकते हो और
उस पर विजय पा सकते हो । 10



சாதிகள் இல்லையடி பாப்பா ! — குலத்
தாழ்ச்சி உயர்ச்சி சொல்லல் பாவம் ;
நீதி, உயர்ந்த மதி; கல்வி — அன்பு
நிறைய உடையவர்கள் மேலோர்.

चादिगळ् इल्लैयडि पाप्पा, — कुल-त्
ताऴ्चि उयर्च्चि सॊल्लल् पावम् ;
नीति उयर्न्दमति कल्वि — अऩ्बु
निऱैय उडैयवर्गळ् मेलोर्।

मेरे बच्चे, जात-पाँत बेकार की बातें हैं।
ऊँचे और नीचे कुलों की चर्चा
करना पाप है।
याद रखो मुन्ने, वही बड़े कुल का जनमा है
जो न्यायी है, समझदार है, विद्वान है और स्नेही है।



24. பெண் விடுதலை

பெண்ணுக்கு விடுதலை என்று இங்கோர் நீதி
　　பிறப்பித்தேன்; அதற்குரிய பெற்றி கேளீர்!
மண்ணுக்குள் எவ்வுயிரும் தெய்வம் என்றால்
　　மனையாளும் தெய்வமன்றோ? மதி கெட்டீரே!
விண்ணுக்குப் பறப்பது போல் கதைகள் சொல்வீர்;
　　விடுதலை என்பீர், கருணை வெள்ளம் என்பீர்,
பெண்ணுக்கு விடுதலை நீரில்லை என்றால்
　　பின்னிந்த உலகிலே வாழ்க்கையில்லை.

24. पॆण् विडुदलै

पॆण्णुक्कु विडुदलै ऎऩ्ऱिङ्गोर् नीति
　　पिऱप्पित्तेऩ्; अदर्क्कुऱिय पॆट्रि केळीर्!
मण्णुक्कुळ् ऎव्वुयिरुम् दॆय्वमॆऩ्ऱाल्,
　　मऩैयाळुम् दॆय्वमऩ्ऱो? मतिकॆट्टीरे!
विण्णुक्कु परप्पदु पोल् कदैगळ् सॊल्वीर्,
　　विडुदलै ऎऩ्बीर्, करुणै वॆळ्ळम् ऎऩ्बीर्,
पॆण्णुक्कु विडुदलै नीरिल्लै ऎऩ्ऱाल्,
　　पिऩ्ऩिन्द उलगितिले वाऴ्क्कै इल्लै!

24. स्त्री-स्वातंत्र्य

सुनो, मैं घोषणा करता हूँ नए कानून की—
औरत आज़ाद है।
सुनो ध्यान से यह कानून क्या है :
अगर दुनिया के सभी जीव देवता माने जाते हैं
तो पत्नी देवी क्यों नहीं, बोलो मूर्खो ?
तुम उड़ने उड़ाने की शेखी बघारोगे,
आज़ादी एवं दया-करुणा का नाम ले लेकर
आनंद विह्वल हो जाओगे,
किंतु यदि तुम अपने समाज में स्त्रियों को
आज़ादी से वंचित रखोगे
तो पृथ्वी पर कैसा जीवन रह जाएगा ?

25. பெண்கள் விடுதலைக் கும்மி

கும்மியடி ! தமிழ்நாடு முழுதும்
குலுங்கிட கை கொட்டி கும்மியடி !
நம்மைப் பிடித்த பிசாசுகள் போயின !
நன்மை *கண்டோம் என்று கும்மியடி ! 1

(கும்மியடி)

ஏட்டையும் பெண்கள் தொடுவது தீமை என்று
எண்ணி இருந்தவர் மாய்ந்து விட்டார்;
வீட்டுக்குள்ளே பெண்ணைப் பூட்டி வைப்போம் என்ற
விந்தை மனிதர் தலை கவிழ்ந்தார் 2

(கும்மியடி)

25. पॆण्गळ् विडुदलै-क् कुम्मि

कुम्मियडि ! तमिऴ्नाडु मुऴुदुम्
कुलुँगिड-क् कैक्कॊट्टि-क् कुम्मियडि !
नम्मै-प् पिडित्त पिसासुगळ् पोयिऩ
नऩ्मै-क् कण्डोमॆऩ्ऱु कुम्मियडि ! (कुम्मि) 1

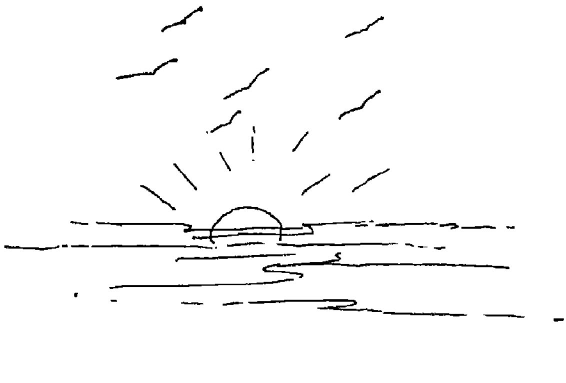
एट्टैयुम् पॆण्गळ् तॊडुवदु तीमै ऎऩ्ऱु
ऎण्णि इरुन्दवर् मायन्दु विट्टार् ;
वीट्टुक्कुळ्ळे पॆण्णै पूट्टिवैप्पोम् ऎऩ्ऱ
विन्दै मऩिदर् तलै कविऴ्न्दार् । (कुम्मि) 2

25. स्त्रियों का मुक्ति-नृत्य

थप, थप, थप !
आओ, तालियाँ बजाएँ
जिसे सुनें सभी तमिल जन !
आओ नाचें और गाएँ
जिसे सुनें सभी जन ।

हमें डराने वाले भूत-पिशाच भाग गए
अच्छे दिनों की प्रातःवेला आई है ।
अब अच्छी अच्छी बातें होंगी ।
आओ, तालियाँ बजाएँ.........। 1

वे लोग अब नहीं रहे जो
स्त्रियों का पुस्तक छूना ग़लत मानते थे ।
वे शर्म के पात्र थे, वे अजीब मर्द ।
वे चाहते थे कि औरतें घरों में बंद रहें ।
आओ तालियाँ बजाएँ........ । 2



கற்பு நிலை என்று சொல்ல வந்தார், இரு
கட்சிக்கும் அஃது பொதுவில் வைப்போம்
வற்புறுத்தி பெண்ணைக் கட்டிக் கொடுக்கும்
வழக்கத்தைத் தள்ளி மிதித்திடுவோம், 5
(கும்மியடி)

பட்டங்கள் ஆள்வதும் சட்டங்கள் செய்வதும்
பாரினில் பெண்கள் நடத்த வந்தோம் ;
எட்டும் அறிவினில் ஆணுக்கிங்கே பெண்
இளைப்பில்லை காண் என்று கும்மியடி! 6
(கும்மியடி)

○

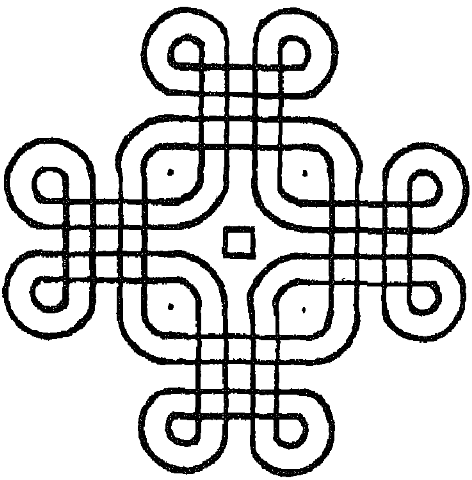
कर्पु निलै ऎँन्ऱु सॊॅल्ल वन्दार्, इरु
कट्चिक्कुम् अह्दु पॊॅदुविल् वैप्पोम्;
वऱ्पुऱुत्ति-प् पैँण्णै-क् कट्टि-क् कॊॅडुक्कुम्
वऴक्कत्तै तळ्ळि मिदित्तिडुवोम्। (कुम्मि) 5

पट्टंगळ् आळ्वदुम् सट्टंगळ् सेय्वदुम्
पारिऩिल् पैँण्गळ् नडत्त वन्दोम् ;
ऎँट्टुम् अऱिविऩिल् आणुक्किंगे पैँण्
इळैप्पिल्लै काण् ऎँन्ऱु कुम्मियडि। (कुम्मि) 6

○

यदि वे पत्नी के सतीत्व की बात करते हैं
तो हो वह पति-पत्नी दोनों ही के लिए अनिवार्य ।
विवाह में स्त्रियों की सहमति न लेने की
जो परिपाटी चली आई है, उसे हम कुचल देंगी।
आओ तालियाँ बजाएँ………। 5

अब हम स्त्रियाँ ही कानून बनाएँगी और दुनिया चलाएँगी ।
नहीं हैं कम हम बुद्धि में मर्दों के मुकाबले किसी भी तरह ।
आओ तालियाँ बजाएँ………। 6



26. புதுமைப் பெண்

நிமிர்ந்த நன்னடை நேர்கொண்ட பார்வையும்
நிலத்தில் யார்க்கும் அஞ்சாத நெறிகளும்,
திமிர்ந்த ஞானச் செருக்கும் இருப்பதால்
செம்மை மாதர் திறம்புவ தில்லையாம்;
அமிழ்ந்து பேரிருளாம் அறியாமையில்
அவலம் எய்தி கலையின்றி வாழ்வதை
உமிழ்ந்து தள்ளுதல் பெண்ணற மாகுமாம்
உதய கன்னி உறைப்பது கேட்டீரோ! 7

26. पुदुमै-प् पॆण्

निमिर्न्द नऩ्ऩडै नेर्कॊण्ड पार्वैयुम्,
निलत्तिल् यार्क्कुम् अंजाद नॆऱिगळुम्,
तिमिर्न्द ज्ञाऩ-च् चॆरुक्कुम् इरुप्पदाल्
चॆम्मै मादर् तिऱम्बुवदिल्लैयाम्;
अमिऴ्न्दु पेरिरुळाम् अऱियामैयिल्
अवलम् ऎय्दि-क् कलैयिऩ्ऱि वाऴ्वदै
उमिऴ्न्दु तळ्ळुदल् पॆण्णऱमागुमाम्
उदय कऩ्ऩि उऱैप्पदु केट्टीरो ! 7

26. नई नारी

वही है नई नारी जो राजसी चाल से चलती है
और देखती है सीधे तुम्हारी आँखों में ।
उसे पृथ्वी की किसी चीज़ से डर नहीं लगता
और वह गौरवान्वित है अपनी विद्या की दीप्ति से ।
ऐसी स्त्रियाँ स्थिरमति वाली होती हैं और
वे कभी चकाचौंध में राह नहीं भूल सकतीं ।
अज्ञान के घन अंधकार में
भटक जाना उन्हें कतई स्वीकार नहीं ।
संस्कृति विहीन जीवन को
और उसके साथ चिपटी यातनाओं को
वे हिकारत से नामंजूर कर देती हैं । 7



சாத்திரங்கள் பல பல கற்பராம்;
சவுரியங்கள் பல பல செய்வராம்
மூத்த பொய்மைகள் யாவும் அழிப்பராம்;
மூடக் கட்டுக்கள் யாவும் தகர்ப்பராம்;
காத்து மானிடர் செய்கை அனைத்தையும்
கடவுளர்க்கு இனிதாக சமைப்பராம்;
ஏத்தி ஆண்மக்கள் போற்றிட வாழ்வராம்;
இளைய நங்கையின் எண்ணங்கள் கேட்டீரோ! 9

○

सात्तिरंगळ् पलपल कर्पराम् ;
सवुरियंगळ् पलपल सैय्वराम्
मूत्त पॅाय्मैगळ् यावुम् अऴिप्पराम् ;
मूड-क् कट्टुक्कळ् यावुम् तगर्प्पराम्;
कात्तु मानिडर् सैय्गै अऩैत्तैयुम्
कडवुळर्क्कु इऩिदाग समैप्पराम् ;
एत्ति आण्मक्कळ् पोट्रिड वाऴ्वराम्;
इळैय नंगैयिऩ् ऍण्णंगळ् केट्टीरो ! 9

○

वे अनेकानेक शास्त्रों का अध्ययन करेंगी,
जीवन में और भी सुखों-सुविधाओं को लाएँगी,
युगों पुरानी मिथ्या परम्पराओं को वे हटाएँगी,
और सभी अंधविश्वासों को तोड़ फेंकेंगी,
हर मानव गतिविधि का वे ध्यान रखेंगी
ताकि सभी देव तुल्य बन सकें।
वे पुरुषों की प्रशंसा को जीत लेंगी। 9

27. முரசு

ஊருக்கு நல்லது சொல்வேன் — எனக்கு
உண்மை தெரிந்தது சொல்வேன் ;
சீருக் கெல்லாம் முதலாகும் — ஒரு
தெய்வம் துணை செய்ய வேண்டும். 1

சாதிக் கொடுமைகள் வேண்டாம் — அன்பு
தன்னில் செழித்திடும் வையம் ;
ஆதரவுற்று இங்கு வாழ்வோம் — தொழில்
ஆயிரம் மாண்புறச் செய்வோம். 8

27. मुरसु

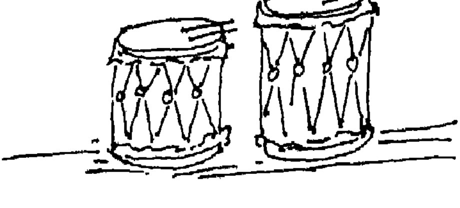
ऊरुक्कु नल्लदु सॆॉल्वेऩ् — ऍऩक्कु
उण्मै तॆॅरिन्ददु सॆॉल्वेऩ् ;
सीरुक्कॆॅल्लाम् मुदलागुम् — ऒॉरु
दॆॅय्वम् तुणै सॆॅय्यवेण्डुम् । 1

चादि-क् कॊॉडुमैगळ् वेण्डाम्, — अऩ्बु
तऩ्ऩिल् सॆॅऴित्तिडुम् वैयम्;
आदरवुट्रिङ्गु वाऴ्वोम्; — तॊॉऴिल्
आयिरम् माण्बुऱ-च् चॆॅय्वोम् । 8

27. डंका

मुझे बताने दो वह बात जो सारे शहर के लिए अच्छी है ।
मुझे बताने दो सच को जिसे मैं जानता हूँ ।
इस काम में भगवान मेरी मदद करेंगे । 1

जाति-व्यवस्था की निर्दयताओं को आओ ख़त्म करें ।
दुनिया रहने के लिए खुशहाल हो जाएगी ।
एक दूसरे की रोज़ी रोटी में आओ मदद करें,
और तरह-तरह के धंधों को उत्कृष्ट बनाएँ । 8



பெண்ணுக்கு ஞானத்தை வைத்தான் — புவி
பேணி வளர்த்திடும் ஈசன் ;
மண்ணுக்குள்ளே சில மூடர் — நல்ல
மாதரறிவை கெடுத்தார். 9

கண்கள் இரண்டினில் ஒன்றைக் — குத்தி
காட்சி கெடுத்திடலாமோ?
பெண்கள் அறிவை வளர்த்தால் — வையம்
பேதமை அற்றிடும் காணீர். 10

पैंण्णुक्कु ज्ञाऩत्तै वैत्ताऩ् — भुवि
पेणि वळर्त्तिडुम् ईसऩ् ;
मण्णुक्कुळ्ळे सिल मूडर् — नल्ल
मादरऱिवै-क् कैंडुत्तार् । 9

कण्गळिरण्डिऩिल् ऒऩ्ऱै — कुत्ति
काट्चि कैंडुत्तिडलामो ?
पैंण्गळऱिवै वळर्त्ताल् — वैयम्
पेदमै अट्रिडुम् काणीर् । 10

परमात्मा ने स्त्रियों को विवेक बुद्धि दी
पर दुनिया में किसी मूर्ख ने उनकी राह रोक दी । 9

यह कहाँ की बुद्धिमानी है कि एक आँख बंद कर ली जाए
और सारी दर्शनीयता ही ख़राब कर ली जाए ?
औरतों की मेधा को यदि बढ़ावा दिया जाए
तो वे संसार से अज्ञान के अंधकार को भगा देंगी । 10



யாரும் பணிந்திடும் தெய்வம் — பொருள்
யாவினும் நின்றிடும் தெய்வம்,
பாருக்குள்ளே தெய்வம் ஒன்று ; இதில்
பற்பல சண்டைகள் வேண்டாம். 13

உடன் பிறந்தார்களைப் போலே — இவ்
வுலகில் மனிதர் எல்லாரும்
இடம் பெரிதுண்டு வையத்தில் — இதில்
ஏதுக்கு சண்டைகள் செய்வீர்? 21

यारुम् पणिन्दिडुम् दैँय्वम् — पॆॅरुळ्
याविनुम् निन्ऱिडुम् दैँय्वम्,
पारुक्कुळ्ळे दैँय्वम् ऒॅन्ऱु; — इदिल्
पऱ्पल सण्डैगळ् वेण्डाम्। 13

उडऩ् पिरन्दार्गळै-प् पोले — इव्
वुलगिल् मऩिदरेल्लारुम्
इडम् पॆॅरिदुण्डु वैयत्तिल् — इदिल्
एदुक्कु-च् चण्डैगळ् सैँय्वीर्? 21

सभी जन उसी ईश्वर की स्तुति करते हैं,
जो विश्व ब्रह्मांड को चलाता है ।
सर्वत्र, पूरे विश्व में एक ही ईश्वर व्याप्त है
इस बात को लेकर संघर्ष की कहाँ गुंजाइश है । 13

सभी लोग भाइयों की तरह रहें इस दुनिया में ।
इतनी बड़ी दुनिया है सभी को अच्छी तरह बसाने के लिए ।
फिर क्यों करें हम युद्ध एक दूसरे से बिला वजह ? 21



வயிற்றுக்கு சோறுண்டு கண்டீர்! — இங்கு
வாழும் மனிதர் எல்லோர்க்கும்;
பயிற்றி உழுதுண்டு வாழ்வீர்! - பிறர்
பங்கை திருடுதல் வேண்டாம். 23

பாருக்குள்ளே சமத்தன்மை — தொடர்
பற்றும் சகோதரத் தன்மை
யாருக்கும் தீமை செய்யாது — புவி
எங்கும் விடுதலை செய்யும். 29

○

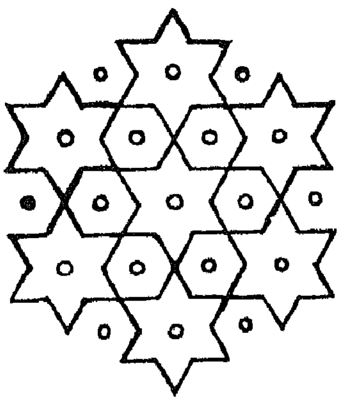
वयिट्रुक्कु सोरुण्डु कण्डीर् ! — इंगु
वाऴुम् मनिदर् एल्लोर्क्कुम्;
पयिट्रि उऴुदुण्डु वाऴ्वीर् ! पिऱर्
पंगै तिरुडुदल् वेण्डाम् । 23

पारुक्कुळ्ळे समत्तन्मै — तॊडर्
पट्रुम् सगोदर-त् तन्मै
यारुक्कुम् तीमै सॆय्यादु — भुवि
ऍङ्गुम् विडुदलै सॆय्युम् । 29

○

आओ देखें कि दुनिया के हर आदमी के लिए
खाने को काफ़ी है या नहीं।
लोगों को शिक्षित करो, अपनी ज़मीन जोतो
और अच्छा जीवन बिताओ।
कभी भी दूसरे का हक़ न मारो। 23

दुनिया के हर इंसान को समानता मिलने पर
किसी का नुकसान न होगा बल्कि दुनिया मुक्त होगी। 29



28. தொழில்

இரும்பை காய்ச்சி உருக்கிடுவீரே!
யந்திரங்கள் வகுத்திடுவீரே!
கரும்பைச் சாறு பிழிந்திடுவீரே!
கடலில் மூழ்கி நன் முத்தெடுப்பீரே!
அரும்பும் வேர்வை உதிர்த்துப்புவிமேல்
ஆயிரம் தொழில் செய்திடுவீரே!
பெரும் புகழ் நுமக்கே இசைக்கின்றேன்
பிரம தேவன் கலையிங்கு நீரே! 1

○

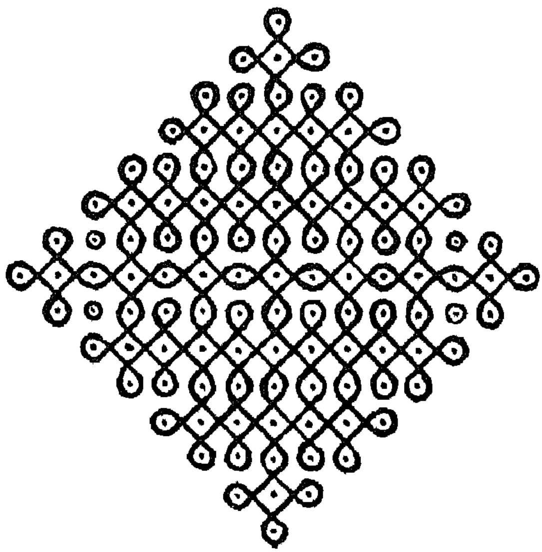
28. तॊऴिल्

इरुम्बै-क् काय्चि उरुक्किडुवीरे !
यन्तिरंगळ् वगुत्तिडुवीरे !
करुम्बै-च चाऱु पिऴिन्दिडुवीरे !
कडलिल् मूऴ्गि नन्मुत्तॆडुप्पीरे !
अरुम्बुम् वेर्वै उदिर्त्तु भुविमेल्
आयिरम् तॊऴिल् सॆय्दिडुवीरे !
पॆरुम् पुगऴ् नुमक्के इसैक्किन्ऱेन् ।
बिरम देवन् कलैयिङ्गु नीरे ! 1

○

28. श्रम

पिघलाओ लोहा, बनाओ मशीनें ।
गन्नों का रस निचोड़ लो ।
समुद्र में पैठो गहरे और गहरे
और मोती ढूँढ़ लाओ ।
हज़ारों हज़ार धंधों में लग कर मेहनत करो ।
मैं तुम्हारी तारीफ़ के पुल बाँधूँ,
ब्रह्मा की तरह तुम इस पृथ्वी पर सृष्टि कर्ता हो । 1



29. புதிய கோணங்கி

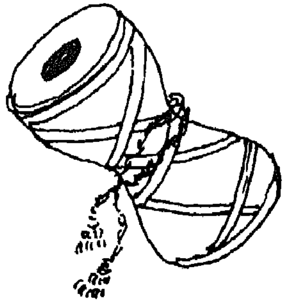
குடு குடு குடுகுடு குடுகுடு குடுகுடு;
நல்லகாலம் வருகுது; நல்ல காலம் வருகுது ;
சாதிகள் சேருது ; சண்டைகள் தொலையுது ;
சொல்லடி, சொல்லடி, சக்தி, மாகாளீ !
வேதபுரத்தாருக்கு நல்லகுறி சொல்லு. 1

29. पुदिय कोणंगि

गुडुगुडु गुडुगुडु गुडुगुडु गुडुगुडु
नल्लकालम् वरुगुदु ; नल्लकालम् वरुगुदु;
जादिगळ् सेरुदु ; सण्डैगळ् तॊलैयुदु ;
सॊल्लडि, सॊल्लडि, शक्ति, माकाळी !
वेदपुरत्तारुक्कु नल्ल कुऱि सॊल्लु । 1

29. एक नया ज्योतिषी

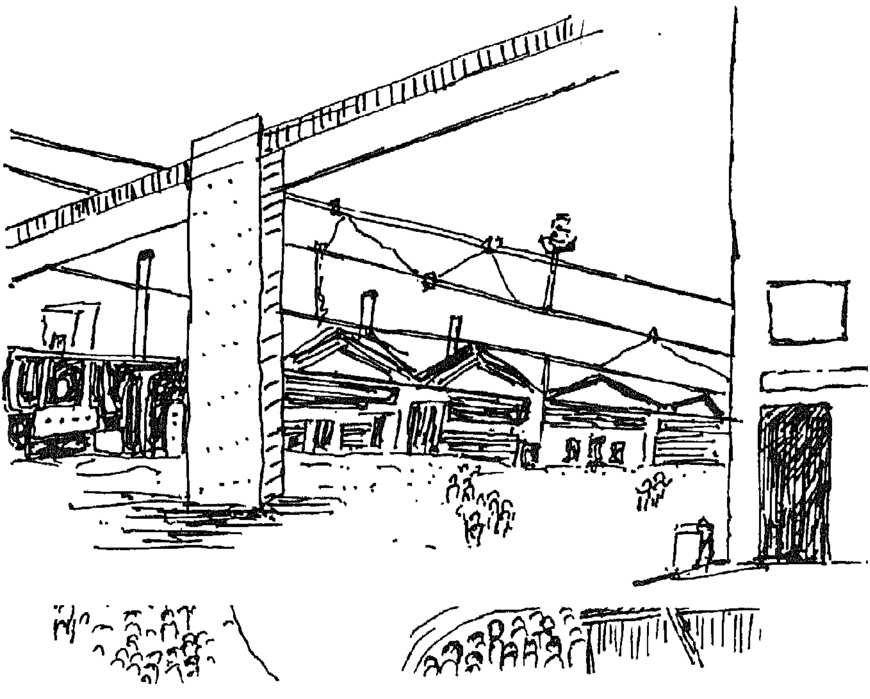
डुग डुग डुग डुग डुग डुग डुग डुग
आए दिन खुशहाली के, जनता की खुशहाली के !
अब नहीं हैं जात पाँत, ऊँच नीच की कोई बात ।
शक्ति ! महा काली ! बोलो ! जुबान खोलो !
वेदपुरा के लोगों के लिए सुनहरे भविष्य की घोषणा करो । 1



குடுகுடு குடுகுடு குடுகுடு குடுகுடு ;
தரித்திரம் போகுது, செல்வம் வருகுது,
படிப்பு வளருது, பாவம் தொலையுது,
படிச்சவன் சூதும், பாவமும் பண்ணினால்
போவான், போவான், ஐயோவென்று போவான். 2

गुडुगुडु गुडुगुडु गुडुगुडु गुडुगुडु
दरित्तिरम् पोगुदु; सैॅल्वम् वरुगुदु ;
पडिप्पु वळरुदु; पावम् तॊॅलैयुदु ;
पडिच्चवऩ् सूदुम् पावमुम् पण्णिनाल्,
पोवाऩ् पोवाऩ् ऐय्योवैॅन्रु पोवाऩ्। 2

डुग डुग डुग डुग डुग डुग डुग डुग
विपिन्नता गई। संपन्नता आई।
फैला ज्ञान का प्रकाश, हुआ पापों का सत्तानाश।
ज्ञानवान लोग यदि सीधे सादे जन को
ठगने की कोशिश करेंगे तो उनका सर्वनाश हो जाएगा। 2



குடுகுடு குடுகுடு குடுகுடு குடுகுடு ;
வேதபுரத்திலே வியாபாரம் பெருகுது ;
தொழில் பெருகுது, தொழிலாளி வாழ்வான் ;
சாத்திரம் வளருது; சூத்திரம் தெரியுது ;
யந்திரம் பெருகுது; தந்திரம் வளருது ;
மந்திரமெல்லாம் வளருது, வளருது . 3

○

गुडुगुडु गुडुगुडु गुडुगुडु गुडुगुडु
वेदपुरत्तिले वियापारम् पॆरुगुदु ;
तॊऴिल् पॆरुगुदु, तॊऴिलाळि वाऴ्वाऩ् ;
सात्तिरम् वळरुदु सूत्तिरम् तॆरियुदु ;
यन्तिरम् पॆरुगुदु तन्तिरम् वळरुदु ;
मन्तिरम् ऎल्लाम् वळरुदु वळरुदु । 3

○

डुग डुग डुग डुग डुग डुग डुग डुग
व्यापार और उद्योग को सभी सीख रहे हैं और लोग हैं सम्पन्न ।
ज्ञान विज्ञान की जिज्ञासा फैल रही है, और
भय का नाम भी नहीं है, न्याय का डंका बज रहा है ।
जागरण की बेला आई है । झाड़ फूंक का जादू
काम कर गया है हम लोगों के इर्द गिर्द । 3

30. ஜய பேரிகை

ஜய பேரிகை கொட்டடா! — கொட்டடா!
ஜய பேரிகை கொட்டடா!

காக்கை குருவி எங்கள் ஜாதி — நீள
கடலும் மலையும் எங்கள் கூட்டம்
நோக்கும் திசையெலாம் நாமன்றி வேறில்லை
நோக்க நோக்க களியாட்டம். 3

○

30. जय भेरिगै

जय भेरिगै कॊट्टडा ! —कॊट्टडा !
जय भेरिगै कॊट्टडा !

काक्कै कुरुवि ऍङ्गळ् जाति — नीळ्
कडलुम्, मलैयुम् ऍङ्गळ् कूट्टम्;
नोक्कुम् दिसैयॆलाम् नामन्ऱि वेऱिल्लै;
नोक्क नोक्क-क् कळियाट्टम् । 3

○

30. जय भेरी

बजाओ, बजाओ ! जय भेरी बजाओ !
बजाओ, बजाओ ! जय भेरी बजाओ !
कौआ और गौरैया हैं हमारी ही जाति के
विशाल सागर और अडिग पर्वत हैं हमारे ही परिजन ।
जिधर देखो उधर हम ही हम हैं
जितना देखो उतना ही आनंद और आनंद है । 3

31. வாழிய செந்தமிழ்

வாழிய செந்தமிழ்! வாழ்க நற்றமிழர்!
வாழிய பாரத மணித்திருநாடு!
இன்றெமை வருத்தும் இன்னல்கள் மாய்க!
நன்மை வந்தெய்துக! தீதெலாம் நலிக!
அறம் வளர்ந்திடுக! மறம் மடிவுறுக!
ஆரிய நாட்டினர் ஆண்மையோடியற்றும்
சீரிய முயற்சிகள் சிறந்து மிக்கோங்குக!
நந்தேசத்தினர் நாடொறும் உயர்க!
வந்தே மாதரம்! வந்தே மாதரம்!

○

31. वाऴिय सेन्तमिऴ

वाऴिय सेन्तमिऴ् ! वाऴ्ग नट्रमिऴर् !
वाऴिय भारत मणि-त् तिरुनाडु !
इऩ्ऱेमै वरुत्तुम् इऩ्ऩल्गळ् माय्ग !
नऩ्मै वन्दैय्दुग ! तीदैलाम् नलिग !
अऱम् वळर्न्दिडुग ! मऱम् मडिवुऱुग !
आरिय नाट्टिऩर् आण्मैयोडियट्रुम्
सीरिय मुयऱ्चिचगळ् सिऱन्दु मिक्कोंगुग !
नन्देसत्तिऩर् नाडॉऱुम् उयर्ग !
वन्दे मातरम् ! वन्दे मातरम् !

○

31. अमर रहे विशुद्ध तमिल !

अमर रहे विशुद्ध तमिल !
अमर रहें अच्छे तमिल जन !
अमर रहे भारत की अनमोल धरती !
हमारे ऊपर आने वाली विपत्तियों का नाश हो !
हम हर बात में कुशलता-प्रवीणता प्राप्त करें !
सभी बुराइयों का नाश हो !
धर्म की जय हो ! अधर्म का नाश हो !
इस पवित्र देश के महान लोगों के सत्कर्मों
के फल हमें मिलें !
हमारे देशवासी सदा सर्वदा प्रगति पर रहें !
वन्देमातरम् ! वन्देमातरम् !

टिप्पणियाँ

मधुर तमिल की भूमि हमारी

कावेरी, पेन्नइ, पोरुन्नाइ और वैगाई नदियों के नाम हैं।

कुमारी देवी कन्याकुमारी को कहा गया है।

तिरुमलाइ प्रसिद्ध वैष्णव तीर्थ है।

कम्बन प्राचीन तमिल कवि हैं जिन्होंने तमिल में रामायण लिखी थी।

वल्लुवर प्राचीन तमिल कवि हैं जिन्होंने प्रसिद्ध काव्य तिरुकुरल की रचना की थी।

सिलप्पदिकारम (कड़े की कथा) प्राचीन तमिल काव्य है।

भारत माँ की अनमोल ध्वजा

यह कविता 1909 ई० में लिखी गई थी। इसमें भारती ने राष्ट्र ध्वज की कल्पना की है। यह ध्वज लाल रंग का है और इसके एक ओर इन्द्र का बज्र बना है। दूसरी ओर इस्लाम का ईद का चाँद है और दोनों के बीच है वन्देमातरम्। यह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के तिरंगे झंडे के आने के बहुत पहले की बात है।

भारत देश

मूल कविता में अव्वई को 'तमिल पुत्री'-कहा गया है। अव्वई तमिल की प्रसिद्ध कवियित्री है जो प्राचीन काल में हुई थी।

आजादी

परय्यर, तियर, पुलय्यर, परवर, कुरवर और मरवर उन कुछ जातियों के नाम हैं जिनका शोषण किया गया।

आजादी का एक पल्लु

पल्लु उस लोकगीत को कहते हैं जिसे शोषित जाति पल्ल के लोग गाते हैं।

नया रूस

यह कविता रूसी क्रांति के तुरंत बाद लिखी गई थी।

कन्नम्मा, मेरी प्रिया—1 ; कन्नमा, मेरी प्रिया—2 ; मेरा प्रेमी कान्हा

ये तीन कविताएँ 'कन्नन पाट्टु' से ली गई हैं। कन्नन पाट्टु में भारती की कृष्ण संबंधी 23 कविताएँ हैं। इनमें कन्नन (कान्हा, कृष्ण) को प्रेमी, प्रिया (कन्नम्मा), पिता, माता, शिशु, देवता, देवी, सम्राट, शिष्य, सखा-सखी और दास-दासी के रूप में देखा गया है।

भारत की जनता

यह कविता 1920 ई० में लिखी गई थी। इसमें भारती ने नए भारत के जागरण का गीत गाया था। भारत को इसमें 30 कोटि लोगों (भारत की तत्कालीन जन-संख्या) के समुदाय के रूप में देखा गया है।

स्त्रियों का मुक्ति-नृत्य

मूल कविता में नृत्य का संकेत लड़कियों के उस कुम्मि नृत्य से है जिसमें गायन के साथ-साथ तालबद्ध रूप में तालियाँ बजाई जाती हैं।

डंका

डंके (नगाड़े) का इस्तेमाल किसी महत्त्वपूर्ण घोषणा के पूर्व लोगों का ध्यान आकृष्ट करने के लिए किया जाता था।

एक नया ज्योतिषी

'डुग डुग डुग' ध्वनि से अभिप्रेत है भिखारियों द्वारा बजाई जाने वाली डुगडुगी। ये भिखारी भविष्य की बातें भी बताया करते थे। भारती ने इस लोक-चरित्र को अपनी कविता में नए विश्व के आगमन की सूचना देने के निमित्त रखा है।

TABLE - 5 UTTAR PRADESH

CODE NO.	CLASS I L	I SS	I SC	II L	II SS	II SC	III L	III SS	III SC	IV L	IV SS	IV SC	V L	V SS	V SC	TOTAL
1.1.1																-
1.1.2																-
1.2.1																-
1.2.2								1		3						6
1.2.3				1			1			1	2					7
1.2.4							1									3
1.2.5										5	3					8
1.3.1																-
1.3.2										2						2
1.3.3																-
1.4.1	1			1						3						7
1.4.2																-
Total										14	5					33
2.1.1											1					13
2.1.2																2
2.2.1											[illegible]					9
2.2.2																-
[illegible]																-
Total																24
[illegible]								1								1
[illegible]										1						8
[illegible]										1						10
[illegible] 4																-
Total	4			[illegible]			1	[illegible]								17
4.1.1								1		1	1					48
4.1.2																1
4.1.3							1				2					3
4.2.1				1			1				12					20
4.2.2								4								9
4.2.3								4								4
4.2.4										11						23
4.2.5																
Total										15	[illegible]					81
[illegible]																-
[illegible] 2										1						1
5.2.1																-
5.2.2																2
5.2.3																-
5.2.4								4								4
5.2.5																-
5.3.1																1
5.3.2								1								3
5.3.3																-
Total										1	[illegible]					23
[illegible]																1
[illegible]																2
6.1.3																-
6.1.4																-
Total																3
7.1.1																4
7.1.2																-
7.1.3																-
7.1.4																-
[illegible] 1																12
7.2.2				1												5
7.2.3									2							[illegible]
7.2.4											4					11
7.3.1										2	3					5
[illegible]										4	4					11
[illegible] 3										4						22
Total									8	10	[illegible]	11				73
8.1.1										1						3
8.2.1								1								1
8.3.1																-
8.3.2																-
Total								1		1						4
[illegible]											4					4
9.1.2										2						4
9.1.3												1				1
9.1.4																-
9.2.1																1
9.2.2																1
Total									3							25
10.1.1								25	104	3	7	81				236
10.1.2										1						26
10.2.1										1	7	4				85
10.3.1									74							203
10.3.2									16							55
10.3.3								4	14			19				37
[illegible] 4									28							57
10.3.5									72			4				132
Total								76	338	5	82	304				812

L - Language, SS - Social Studies EVS-I, SC - Science EVS-II

Participation of all groups-linguistic, regional, religious, caste and class groups, peasants, labourers, students, women and people of princely states (1.3.1); Essential features of our constitution (2.2.1); Respect of rights and abiding by duties are essential for every citizen (2.2.3); Patriotism (3.1.4); Contribution of Indians in the field of science, Mathematics, Astronomy and Medicine (4.2.5); Respecting opinions and thoughts of each other (5.2.1), Equal rights and opportunities for all (5.1.1), Recognising the value of rights to vote (5.2.3), Respect for liberty (5.2.5), Using rational and logical thinking in all matters (5.3.3); Removal of sterotype roles of women (6.1.3); Equal remuneration to the workers irrespective of their sex (6.1.4); Replenishing of the used natural resourses like forest (7.1.2), Conservation of Energy-harnessing of alternative sources of energy such as solar, wind and water energy (7.1.3), Renewable sources of energy (7.1.4), fulfilling Constitutional Obligations (8.3.1); Mutual respect and tolerance for others (8.3.2); Overpopulation as an important factor in pollution of all kinds (9.1.4) etc. etc.

On the basis of the above findings it may be considered appropriate to revise the textbooks at primary stage and strengthen and incorporate the desirable core components in an interesting manner without over burdenning the child. It may require recasting of the existing materials and substituting the existing ones with the fresh contents. The findings of the present analysis may serve as guidelines to the personnel engaged in revising the textbooks in Uttar Pradesh.

****

Particulars of the Review Workshop

Venue of the Workshop: Gurukul Kangri Vishwavidyalaya,
Hardwar (U.P.)

Duration of Workshop : March 22-27, 1993

Publisher of Textbooks: Education Department, SCERT,
Lucknow (UP) 1990-92.

Details of the Text Books

Name to the Text book	Classes	Reviewers
Gyan Bharti	I-IV	Dr. S.L. Gautam Dr. S.N. Tripathi
Environmental Studies-I (Social Sciences	III-IV	Sh. Janak Raj Sharma Mrs. Surendra Sharma
Environmental Studies-II (Science)	III-IV	Dr. M.K.Maheshwari Mr. R.K. Sharma

Textbooks for Class V were not printed.

******

A P P E N D I X

LIST OF PARTICIPANTS

LIST OF PARTICIPANTS/RESOURCE PERSONS

Workshop at SIERT, UDAIPUR (22-27 Feb., 1993)

PARTICIPANTS:

1. Chater Singh Babel
   SIERT, Udaipur.
2. Shri A.R. Huria,
   SCERT, Haryana, Gurgaon.
3. Smt. Kokila Jain
   SIERT, Haryana, Gurgaon.
4. Dr. Prem Bharti
   State Institute of Edu.
   Jahangirabad, Bhopal-8.
5. Smt. Raksha Sisodia,
   DIET, Bhopal.
6. Dr. Shyam Sunder Tripathi,
   DIET, Shantinagar, Raipur(MP)
7. Shridhar Rukmangad,
   SCERT, Jahagirabad,
   Bhopal-462008.
8. Miss Vibhuti Awasthi
   State Institute of Edun.
   Jahangirabad
9. Dr. Jagdish Chander Vyas,
   SIERT, Udaipur.
10. Shri B.M. Sanadhya,
    SCERT, Udaipur.
11. Sh. Ghanshyam Lal Joshi,
    SIERT, Udaipur.
12. Mrs Tara Kapoor
    SCERT,Hr. Gurgaon.
13. Sh. C.K. Tyagi,
    SCERT, Haryana Gurgaon.
14. Shri D.C. Grover
    SCERT, Haryana Gurgaon.
15. Shri C.D. Kaushik
    SCERT, Haryana, Gurgaon.
16. Dr. N.K. Vyas
    CHD/MHRD, New Delhi.
    C-4A/52-B, Janakyapuri,
    New Delhi.
17. Dr. Rakesh Tailong,
    SIERT, Udaipur, (Raj.)
18. Shri J.D. Sharma
    SIERT, Udaipur.

RESOURCE PERSONS

1. Dr. N.K. Singh, Retd. (NCERT)
   J-13/93, Cotton Mill Colony,
   Chokka Ghat, Varanasi-2.
2. Dr. Qamaruddin,
   Reader (Retd.) NCERT.
   2365, Nawab Lane,
   Tilak Bazar, Delhi-6.
3. Prof. K.N. Mehrotra
   P-2, Gopal Kunj,
   Ba : Muzaffar Khan, Agra-282002.
4. Shri S.S. Srivastava,
   State Institute of Science Edu.,
   Allahabad-211002.

N.C.E.R.T. Facu.ty:

1. Mr. 'I.P. Rastogi
2. Prof. Puran Chand
   (Programme Coordinator)

INSTITUTE OF ... ERSONS

1. Mr. S.S. Srivastava,
SIE, Allenganj, Allahabad (UP)

2. Dr. N.K. Singh, Retd Reader
J-13/93, Cotton Mill Colony,
Chowka Ghat, Varanasi (UP)

3. Dr. S.N. Tripathi,
Rajya Hindi Sansthan (SCERT)
Varanasi-2.

4. Shri Liladhar Sharma"PARVATIYA"
234, Rajendra Nagar, Lucknow.

5. Dr. J.K. Sood
Ex.Professor (NCERT)
224, Keshav Nagar, Ajmer.

6. Dr. K.L. Chetiwal
DIET (SCERT)
Keshav Puram, Delhi-35.

7. Dr. S.K. Pardadkar
Sr.Lecturer,
Regional College of Education
Ajmer - 305004.

8. Dr. Suresh Pant
PGT, Govt. BoysSr.Sec.School
A-Block, Janakpuri, New Delhi.

9. Sh. Shiv Kumar Mishra
SCERT, Patna- 800006

10. Mr. Babu Nand Prasad
SCERT, Patna- 800006.

11. Mrs. Surendra Sharma
SCERT, Solan-173212 (H.P.)

12. Dr. S.L. Gautam
SCERT, Solan (H.P.)

13. Dr. D.K. Maheshwari
Prof. & Head
Botany Department
Gurukul Kangri Vishwavidyala,
Hardwar.

14. Dr. Ishwar Bhardwaj
Gurukul Kangri Vishwavidyalaya
Hardwar.

15. Dr.Deo Vrat Narayan Sinha
SCERT, Patna-800006

16. Mr. Janak Raj Sharma,
SCERT/TLC, Solan (H.P.)

17. Mr. R.K. Sharma,
SCERT, Solan (H.P.)

18. Mr. G.P. Tripathi,
Deptt. of Elementary
Education, SIE, Allenganj,
Allahabad (U.P.)

19. Dr. A.K. Manav
DPS, BHEL Ranipur,
Hardwar-249403.

20. Mrs. Neerja Saran,
DPS, BHEL, Ranipur,
Hardwar-249403.

21. Dr. M.K. Maheshwari
M.S. College,
Saharanpur (U.P.)

22. Dr. N.K. Vyas, Retd.
Editor, C.H.D./MHRD
C-4A/52B, Janakpuri,
New Delhi.

23. Dr. Prem Narain Bharti
SCERT, Jahangirabad,
Bhopal- .

24. Dr. Prabhat Kumar
Hans Raj College,
Delhi University, Delhi.

25. Dr. Prem Chand Shastri
Gurukul Kangri Vidyalaya
Hardwar.

26. Dr. O.P. Mishra,
Gurukul Kangri Vishwa-
vidyalaya, Hardwar.

NCERT FACULTY:

1. Mr. M.P. Rastogi, Reader
2. Dr. Puran Chand, Professor
(Programme Coordinator)